संस्कृत प्रचार पुस्तक माला सं. २०

सुगम-धातुरूपावलिः

संस्कृत सीखने का शुभारम्भ करनेवाले बालकों, बालिकाओं तथा प्रौढ़ व्यक्तियों को समस्त व्यवहारोपयोगी संस्कृत धातुओं के रूपों का अल्प समय, अल्प परिश्रम तथा अल्प मूल्य में अधिक ज्ञान करानेके लिए सम्पादित अपने ढंग की अभिनव पुस्तक

संस्कृत तथा सनातन संस्कृति के परम पोषक
अमित विभूति, ब्रह्मवेता
श्री देवरहा बाबा संस्कृत प्रचार निधि
वाराणसी
की
सहायता से प्रकाशित

सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्
वाराणसी

विषय-सूची

पृष्ठ १—गण, धातुसंख्या, गणप्रत्यय, धातुओं के उदाहरण, प्रत्ययान्तधातु और उनके उदाहरण तथा इस पुस्तक में दिए हुए २४ धातुओं का विवरण।
पृष्ठ २—धातुओं तथा क्रियाओं के सम्बन्ध में १३ ज्ञातव्य विषयों का विवरण।
पृष्ठ ३—लट्लकार के कर्तृवाच्य में रूप, उनका अर्थ तथा उनके साथ लगाने के लिये कर्मशब्द।
पृष्ठ ४—प्रथम पुरुष के समस्त सर्वनामों, चार संख्यावाचक शब्दों, विशेषणशब्दों तथा एक संज्ञावाचक शब्द का तीनों लिङ्गों में प्रथमान्त रूप तथा एक क्रिया के प्रथम पुरुष के अर्थ सहित रूप तथा छात्रों एवं अध्यापको के लिये कुछ आवश्यक निर्देश।
पृष्ठ ५—लट्लकार के कर्तृवाच्य में रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ ६—लोट्लकार के कर्तृवाच्य के रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ ७—लिङ्लकार के कर्तृवाच्य के रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ ८—लङ्लकार के कर्तृवाच्य के रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ ९—लुङ्लकार के कर्तृवाच्य के रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ १०—णिजन्त धातु और उनके कर्तृवाच्य में छ लकारों में रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ ११—सभी धातुओं के कर्मवाच्य, भाववाच्य तथा कर्मकर्तृवाच्य के रूप एवं उनके अर्थ।
पृष्ठ १२—णिजन्त (प्रेरणार्थक) क्रियाओं के कर्मवाच्य के रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ १३—तुमुन् क्त्वा ल्यप् तथा णमुल् इन प्रत्ययों से बने हुए रूप और उनके अर्थ।
पृष्ठ १४—तव्यत्, अनीयर् ण्यत् एवं यत् आदि कृत्य प्रत्यय एवं क्त, क्तवतु इन कृत् प्रत्ययों से बने हुए रूप तथा उनके अर्थ।
पृष्ठ १५—शतृ, शानच्, स्यतृ, स्यमान, ण्वुल्, तृच् एवं णिनि आदि कृत् प्रत्ययों से बने हुए रूप।
पृष्ठ १६—कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में सानान्य तथा प्रेरणार्थक धातुओं के वर्तमान एवं भविष्यत् काल रूप तथा उनके अर्थ।
पृष्ठ १७—काल एवं उनके अवान्तर भेद तथा उनके कर्तृवाच्य में सामान्य तथा प्रेरणार्थक रूपों के हिन्दी-संस्कृत उदाहरण।
पृष्ठ १८—काल एव उनके अवान्तर भेद तथा कर्मवाच्य में हिन्दी-संस्कृत उदाहरण।
पृष्ठ १९—२० कुछ अन्य उपयोगी धातुओं के छ लकारों के रूप।
पृष्ठ २१—इस पुस्तक की धातुओं के लिट् एवं लुङ्लकार के रूप।
पृष्ठ २२—कुछ धातुओं के लुट् तथा आशीर्लिङ् के रूप तथा उपसर्ग एवं गतिसंज्ञक शब्दों की सूची।
पृष्ठ २३—कुछ धातुओं के सन्नन्त, यङन्त एवं यङ्लुगन्त रूपों के उदाहरण।

१ अक्टूबर २००८ ई०

सम्पादक—*वासुदेव द्विवेदी शास्त्री*

१—धातुओं तथा क्रियाओं के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य बातें

१—जिन मूल शब्दों से संस्कृत की क्रियायें बनती हैं उन्हें धातु कहते हैं। यथा—पठ् (पढ़ना) लिख् (लिखना) भू (होना) कृ (करना) इत्यादि।

२—संस्कृत में लगभग दो हजार धातुएँ हैं। इन समस्त धातुओं को संस्कृत व्याकरण में दश गणों में बाँट दिया गया है। जिन धातुओं के रूप एक समान होते हैं वे एक गण में रखे गये हैं। गणों के नाम तथा इन गणों में भेद होने के कारणों को बायें पृष्ठ पर पढ़िये और उन्हें हृदयस्थ कर लीजिये।

३—धातु तीन प्रकार के होते हैं, परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी। जिनमें परस्मैपद प्रत्यय लगते हैं वे परस्मैपदी, जिनमें आत्मनेपद प्रत्यय लगते हैं वे आत्मनेपदी तथा जिनमें दोनों प्रत्यय लगते हैं वे उभयपदी कहलाते हैं। इस भेद को बायें पृष्ठ पर समझें।

४ - धातु पुनः तीन प्रकार के होते हैं, सकर्मक अकर्मक तथा द्विकर्मक। जिन धातुओं में कर्म लगता है वे सकर्मक, जिन धातुओं में कर्म नहीं लगता है वे अकर्मक तथा जिन धातुओं में दो कर्म लगते हैं वे द्विकर्मक कहलाते हैं। इस भेद को बायें पृष्ठ पर समझें।

५—धातुओं के तीन भेद और हैं। सेट्, अनिट्, तथा वेट्। जिनमें धातु और प्रत्यय के बीच में इट् (इ) लगता है वे सेट् जिनमें नहीं लगता वे अनिट् तथा जिनमें विकल्प से लगता है वे वेट् कहलाते हैं। इनकी पहचान बायें पृष्ठ पर करें।

६—पठ् आदि धातुओं में जिन प्रत्ययों के लगने से पठति, पठतः, पठन्ति आदि क्रियापद बनते हैं उन्हें तिङ् प्रत्यय कहते हैं। वे अठारह प्रकार के होते हैं। इनमें नो परस्मैपद होते हैं और नो आत्मनेपद। परस्मैपदी धातुओं में परस्मैपद प्रत्यय, आत्मनेपदी धातुओं में आत्मनेपद प्रत्यय तथा उभयपदी धातुओं में उक्त दोनों प्रकार के प्रत्यय लगते हैं। दोनों प्रकार के प्रत्यय आगे के पृष्ठों पर लिखे हुए हैं। विद्यार्थी उन्हें ध्यान से पढ़ें और देखें कि इन प्रत्ययों के लगाने से किस प्रकार धातुओं के विभिन्न रूप बनने लगते हैं। उपर्युक्त अठारह प्रकार के तिङ् प्रत्यय केवल वर्तमान काल के ही रूपों में लगते हैं परन्तु इन्हीं में थोड़ा बहुत परिवर्तन एवं परिवर्धन करने से अन्य कालों के रूप बन जाते हैं। इस बात को विद्यार्थी ध्यान देकर अगले पृष्ठों में देखें और समझें धातुओं के अन्त में तिङ् प्रत्ययों के लगाने से ही क्रियायें बनती हैं और इसीलिए संस्कृत में क्रियापदों को तिङन्त कहते हैं।

७—धातुओं में लगने वाले तिङ् प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं, सार्वधातुक एवं आर्धधातुक। लट्, लोट्, लङ् तथा लिङ् लकार में लगने वाले प्रत्यय सार्वधातुक तथा शेष लकारों में लगने वाले प्रत्यय आर्धधातुक कहलाते हैं।

८—संस्कृत व्याकरण के अनुसार संस्कृत क्रियाओं में छः कालभेद तथा चार अर्थप्रकार (Moods) होते हैं। इन्हें प्रकट करने के लिए संस्कृत व्याकरण में दस लकार माने गये हैं। वे लकार ये हैं—लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ् तथा लृङ्। लिङ् के दो भेद होते हैं; विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ्। किस काल और किस अर्थ में कौन लकार होता है इसे विद्यार्थी अगले पृष्ठों में देखें और अच्छी तरह समझ लें।

९—संस्कृत व्याकरण में लकारों का क्रम ऐसा ही दिया हुआ है, परन्तु इस पुस्तक में यह क्रम नहीं रखा गया है। इसमें पहले लट्, लृट्, लोट्, लिङ्, लङ् एवं लृङ् के रूप दिये गए हैं। क्योंकि लट् एवं लृट् तथा लङ् और लृङ् के रूप एक समान होते हैं और इसलिए इन्हें कण्ठस्थ रखने में सुविधा होती है। इनके अतिरिक्त लोट् और लिङ् के रूप दिये गए हैं जो अर्थ की दृष्टि से बहुत कुछ समान होते हैं। परन्तु लिट् तथा लुङ् लकार के रूप भिन्न होते हैं जो अन्त में दिये गये हैं। शेष लुट् तथा आशीर्लिङ् के भी कुछ रूप इस पुस्तक में दिये गये हैं।

१०—संस्कृत में बोलने तथा लिखने के लिए प्रारम्भ में केवल ६ प्रकार के रूपों को कण्ठस्थ रखना आवश्यक है। शेष रूपों का ज्ञान साहित्य के अध्ययन के लिए होना चाहिए।

११—संस्कृत व्याकरण में बतलाये गए कालभेदों के अतिरिक्त हिन्दी में और भी अनेक प्रकार के कालभेद होते हैं। उनका संस्कृत में जिस प्रकार प्रयोग किया जाता है वह इस पुस्तक के अन्त में लिखा है। उसे विद्यार्थी ध्यान से देखें और मन में बैठा लें।

१२—जिस प्रकार धातुओं मे तिङ् प्रत्यय लगते हैं उसी प्रकार कृत् प्रत्यय भी लगते है। कृत् प्रत्ययों से बने हुए शब्द कृदन्त कहलाते हैं। वे प्रत्यय इस पुस्तक में आगे लिखे हुए है।

१३—संस्कृत में क्रियाओं के रूप चार वाच्यो में चलते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य तथा कर्मकर्तृवाच्य। इनके नियम तथा प्रयोग आगे लिखे हुए हैं। विद्यार्थी इन्हें भी ध्यान देकर हृदयंगम कर लें।

मूल धातुओं के गण, उनकी संख्या तथा उनमें होने वाले शप् आदि प्रत्यय, जिनके कारण धातुओं के रूप परस्पर भिन्न हो जाते हैं।

शप् आदि निम्नलिखित प्रत्यय केवल लट् लोट् लङ् एवं लिङ् लकार में तथा शतृ एवं शानच् प्रत्यय में ही होते हैं।

	गण	मूल धातु संख्या	गणकार्य (प्रत्यय)	उदाहरण
समान रूप वाले गण	भ्वादि गण	१०३५	शप्—अ	भू-अ-ति-भवति (गुण-अव्)। पठ्-अ-ति-पठति। खेल-अ-ति-खेलति। जि-अ-ति-जयति (गुण अय्) नी-अ-ति-नयति (गुणअय्)।
	तुदादि गण	१५६	श—अ	हृ-अ-ति—हरति (गुण)। ह्वे-अ-ति—ह्वयति (अय्)। गै-अ-ति—गायति (आय्)।
	दिवादि गण	१२०	श्यन्—य	तुद्-अ-ति—तुदति। लिख-अ-ति—लिखति। प्रच्छ-अ-ति—पृच्छति (प्रच्छ-पृच्छ)। मृ-अ-ते—म्रियते (इयङ्)।
	चुरादि गण	४४१	णि-इ, शप्—अ	दिव्-य-ति—दीव्यति। बुध्-य-ते—बुध्यते। विद्-य-ते—विद्यते। जन्-य-ते—जायते (जन्-जा)।
				चुर-इ-अ-ति—चोरयति (इ को गुण अय्)। कथ-इ-अ-ति—कथयति। प्र-अर्थ-इ-अ-ते—प्रार्थयते।
भिन्न रूप वाले गण	अदादि गण	७२	×	अद्-ति-अति। अस्-ति—अस्ति। हन्-ति—हन्ति। वच्-ति—वक्ति। ब्रू-ते—ब्रूते। या-ति—याति। शी-ते—शेते।
	जुहोत्यादि गण	२४	द्वित्व (धातु को	जु-हु-ति—जुहोति। दा-दा-ति—ददाति-दत्ते। धा-धा-ति—दधाति-धत्ते। भी-भी-ति—बिभेति। भृ-भृ-ति—बिभर्ति।
	स्वादि गग	३५	श्नु—नु	शक्-नु-ति—शक्नोति। आप्-नु-ति—आप्नोति। चि-नु-ति—चिनोति। वृ-नु-ति-ते—वृणोति-वृणुते। (नु को गुण)।
	तनादि गण	१०	उ	तन्-उ-ति-ते—तनोति-तनुते—कृ-करोति-कुरुते। मन्-उ-ते—मनुते। वृण-उ-ते—वृणुते।
	रुधादि गण	२५	श्नम्—न	रुध्-न-ति—रुणद्धि। युज्-न-ति—युनक्ति (धातु के बीच में न होता है) भुज्-न-ति—भुनक्ति। पिस्-न-ति—पिनष्टि।
	क्रयादि गण	६०	श्ना—ना	क्री-ना-ति—क्रीणाति। ज्ञा-ना-ति—जानाति। ग्रह-ना-ति—गृह्णाति। बन्ध-ना-ति—बध्नाति। ग्रथ्-ना-ति-ग्रथनाति।
	कण्ड्वादि गण	४८	यक्—य	कण्डू-य-ति-ते—कण्डूयति-कण्डूयते। मही-य-ते—महीयते। असू-य-ते—असूयते।

सूचना—उपर्युक्त २०१८ धातुओं में लगभग २०० धातु ही अधिक व्यवहार में आते हैं जिनका उल्लेख इस पुस्तक में कर दिया गया है। विद्यार्थी इन्हें एक बार ध्यान से देख लें।

प्रत्ययान्त धातुओं के रूप तथा उनमें होने वाले विशेष प्रत्यय

णिजन्त	प्रेरणार्थक णिच्-इ	पठ—पाठयति	पढ़ाता है।
सन्नन्त	इच्छार्थक सन्-स	पठ—पिपठिषति	पढ़ाना चाहता है।
यङन्त	पौनः पुन्यार्थक-यङ्-य	पठ्—पापठ्यते	बार-बार पढ़ता है।
यङ्लुगन्त	,, ,, लुक्	पठ्—पापठीति	बहुत पढ़ता है।
नामधातु	इच्छार्थक क्यच्-य	पुत्र—पुत्रीयति	
,,	,, काम्यच्-काम्य	पुत्र—पुत्रकाम्यति	पुत्र चाहता है।
,,	आचरणार्थक-क्यच्-य	पुत्रीयति छात्रम्	छात्र को पुत्र के समान मानता है।
,,	,, क्यच्-य	हंस—हंसायते	हंस जैसा आचरण करता है।
,,	,, ,,	तरुण-तरुणायते	तरुण जैसा होता है।
अनुकरणात्मक	डाच्-आ	पटपटाकरोति	पट् पट् करता है।
		पटपटायते	,, ,,
अभूततद्भाव	च्वि-इ	विमलीकरोति	साफ करता है।

नोट—इनका विशेष विवरण पृष्ठ २३ पर देखें।

२४ धातु, जिनके रूप इस पुस्तक में दिये गये हैं।

अस् ★ (पर० अक०) होना, रहता	प्रच्छ (पर० द्वि० अ०) पूछना
कृ (उभ० सक० से०) करना	कथ (पर० द्वि० अ०) कहना
भू (पर० अक० से०) होना	ग्रह (उभ० सक० से०) लेना
पठ् (पर० सक० से०) पढ़ना	ज्ञा (उभ० सक० अ०) जानना
वद् (पर० द्वि० से०) बोलना	दा (उभ० सक० अ०) देना
गम् (पर० सक० अ०)	श्रु (उभ० सक० अ०) सुनना
स्था (पर० अक० ऊ०) ठहरना	शक् (उभ० सक० अ०) सकना
पा (पर० सक० अ०) पीना	प्राप् (उभ० द्वि० अ०) पाना
दृश् (पर० सक० अ०) देखना	शी (आ० अक० से०) सोना
नी (उभ० द्वि० अ०) ले जाना	जागृ (पर० अक० से०) जागना
लिख् (पर० सक० से०) लिखना	याच् (आत्म० द्वि० से०) माँगना
इष् (प० सक० से०) चाहना	मन् (आत्म० सक० अ०) मानना

★ अस् धातु के केवल लट् लोट् लिङ् लङ् एवं शतृ में ही रूप चलते हैं। शेष लकारों के रूप भू धातु के ही समान होते हैं।

१—धातुओं तथा क्रियाओं के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य बातें

१—जिन मूल शब्दों से संस्कृत की क्रियायें बनती हैं उन्हें धातु कहते हैं। यथा—पठ् (पढ़ना) लिख् (लिखना) भू (होना) कृ (करना) इत्यादि।

२—संस्कृत में लगभग दो हजार धातुएँ हैं। इन समस्त धातुओं को संस्कृत व्याकरण में दश गणों में बाँट दिया गया है। जिन धातुओं के रूप एक समान होते हैं वे एक गण में रखे गये हैं। गणों के नाम तथा इन गणों में भेद होने के कारणों को बायें पृष्ठ पर पढ़िये और उन्हें हृदयस्थ कर लीजिये।

३—धातु तीन प्रकार के होते हैं, परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी। जिनमें परस्मैपद प्रत्यय लगते हैं वे परस्मैपदी, जिनमें आत्मनेपद प्रत्यय लगते हैं वे आत्मनेपदी तथा जिनमें दोनों प्रत्यय लगते हैं वे उभयपदी कहलाते हैं। इस भेद को बायें पृष्ठ पर समझें।

४ - धातु पुनः तीन प्रकार के होते हैं, सकर्मक अकर्मक तथा द्विकर्मक। जिन धातुओं में कर्म लगता है वे सकर्मक, जिन धातुओं में कर्म नहीं लगता है वे अकर्मक तथा जिन धातुओं में दो कर्म लगते हैं वे द्विकर्मक कहलाते हैं। इस भेद को बायें पृष्ठ पर समझें।

५—धातुओं के तीन भेद और हैं। सेट्, अनिट्, तथा वेट्। जिनमें धातु और प्रत्यय के बीच में इट् (इ) लगता है वे सेट् जिनमें नहीं लगता वे अनिट् तथा जिनमें विकल्प से लगता है वे वेट् कहलाते हैं। इनकी पहचान बायें पृष्ठ पर करें।

६—पठ् आदि धातुओं में जिन प्रत्ययों के लगने से पठति, पठतः, पठन्ति आदि क्रियापद बनते हैं उन्हें तिङ् प्रत्यय कहते हैं। वे अठारह प्रकार के होते हैं। इनमें नौ परस्मैपद होते हैं और नौ आत्मनेपद। परस्मैपदी धातुओं में परस्मैपद प्रत्यय, आत्मनेपदी धातुओं में आत्मनेपद प्रत्यय तथा उभयपदी धातुओं में उक्त दोनों प्रकार के प्रत्यय लगते हैं। दोनों प्रकार के प्रत्यय आगे के पृष्ठों पर लिखे हुए हैं। विद्यार्थी उन्हें ध्यान से पढ़ें और देखें कि इन प्रत्ययों के लगाने से किस प्रकार धातुओं के विभिन्न रूप बनने लगते हैं। उपर्युक्त अठारह प्रकार के तिङ् प्रत्यय केवल वर्तमान काल के ही रूपों में लगते हैं परन्तु इन्हीं में थोड़ा बहुत परिवर्तन एवं परिवर्धन करने से अन्य कालों के रूप बन जाते हैं। इस बात को विद्यार्थी ध्यान देकर अगले पृष्ठों में देखें और समझें धातुओं के अन्त में तिङ् प्रत्ययों के लगाने से ही क्रियायें बनती हैं और इसीलिए संस्कृत में क्रियापदों को तिङन्त कहते हैं।

७—धातुओं में लगने वाले तिङ् प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं, सार्वधातुक एवं आर्धधातुक। लट्, लोट्, लङ् तथा लिङ् लकार में लगने वाले प्रत्यय सार्वधातुक तथा शेष लकारों में लगने वाले प्रत्यय आर्धधातुक कहलाते हैं।

८—संस्कृत व्याकरण के अनुसार संस्कृत क्रियाओं में छः कालभेद तथा चार अर्थप्रकार (Moods) होते हैं। इन्हें प्रकट करने के लिए संस्कृत व्याकरण में दस लकार माने गये हैं। वे लकार ये हैं—लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ् तथा लृङ्। लिङ् के दो भेद होते हैं; विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ्। किस काल और किस अर्थ में कौन लकार होता है इसे विद्यार्थी अगले पृष्ठों में देखें और अच्छी तरह समझ लें।

९—संस्कृत व्याकरण में लकारों का क्रम ऐसा ही दिया हुआ है, परन्तु इस पुस्तक में यह क्रम नहीं रखा गया है। इसमें पहले लट्, लृट्, लोट्, लिङ्, लङ् एवं लृङ् के रूप दिये गए हैं। क्योंकि लट् एवं लृट् तथा लङ् और लृङ् के रूप एक समान होते हैं और इसलिए इन्हें कण्ठस्थ रखने में सुविधा होती है। इनके अतिरिक्त लोट् और लिङ् के रूप दिये गए हैं जो अर्थ की दृष्टि से बहुत कुछ समान होते हैं। परन्तु लिट् तथा लुङ् लकार के रूप भिन्न होते हैं जो अन्त में दिये गये हैं। शेष लुट् तथा आशीर्लिङ् के भी कुछ रूप इस पुस्तक में दिये गये हैं।

१०—संस्कृत में बोलने तथा लिखने के लिए प्रारम्भ में केवल ६ प्रकार के रूपों को कण्ठस्थ रखना आवश्यक है। शेष रूपों का ज्ञान साहित्य के अध्ययन के लिए होना चाहिए।

११—संस्कृत व्याकरण में बतलाये गए कालभेदों के अतिरिक्त हिन्दी में और भी अनेक प्रकार के कालभेद होते हैं। उनका संस्कृत में जिस प्रकार प्रयोग किया जाता है वह इस पुस्तक के अन्त में लिखा है। उसे विद्यार्थी ध्यान से देखें और मन में बैठा लें।

१२—जिस प्रकार धातुओं में तिङ् प्रत्यय लगते हैं उसी प्रकार कृत् प्रत्यय भी लगते हैं। कृत् प्रत्ययों से बने हुए शब्द कृदन्त कहलाते हैं। वे प्रत्यय इस पुस्तक में आगे लिखे हुए हैं।

१३—संस्कृत में क्रियाओं के रूप चार वाच्यों में चलते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य तथा कर्मकर्तृवाच्य। इनके नियम तथा प्रयोग आगे लिखे हुए हैं। विद्यार्थी इन्हें भी ध्यान देकर हृदयंगम कर लें।

२—वर्त्तमान काल—लट्लकार—कर्तृवाच्य के रूप।

(कर्तृवाच्यमें कर्त्तामें प्रथमा, कर्ममें द्वितीया तथा क्रिया कर्त्ताके पुरुष एवं वचन के अनुसार होती है)

	प्रथम पुरुष के रूप			मध्यम पुरुष के रूप			उत्तम पुरुष के रूप		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प०प्र०	तिप्	तस्	झि अन्ति	सिप्	थस्	थ	मिप्	वस्	मस्
	सः वह	तौ वे दोनों	ते वे सब	त्वम् तुम	युवाम् तुम दोनों	यूयम् तुम सब	अहम् मैं	आवाम् हम दोनों	वयम् हम सब
अस्	अस्ति है	स्तः हैं	सन्ति हैं	असि हो	स्थः हो	स्थ हो	अस्मि हूँ	स्वः हैं	स्मः हैं
कृ	करोति करता है	कुरुतः करते हैं	कुर्वन्ति =	करोषि करते हो	कुरुथः	कुरुथ=	करोमि करता हूँ	कुर्वः करते हैं	कुर्मः
भू	भवति होता है	भवतः होते हैं	भवन्ति=	भवसि होते हो	भवथः=	भवथ =	भवामि होता हूँ	भवावः होते हैं	भवामः
पठ्	पठति पढ़ता है	पठतः पढ़ते हैं	पठन्ति=	पठसि पढ़ते हो	पठथः =	पठथ =	पठामि पढ़ता हूँ	पठावः पढ़ते हैं	पठामः
वद्	वदति बोलता है	वदतः बोलते हैं	वदन्ति=	वदसि बोलते हो	वदथः=	वदथ=	वदामि बोलता हूँ	वदावः बोलते हैं	वदामः
गम् १	गच्छति जाता है	गच्छतः जाते हैं	गच्छन्ति=	गच्छसि जाते हो	गच्छथः=	गच्छथ	गच्छामि जाता हूँ	गच्छावः जाते हैं	गच्छामः
स्था २	तिष्ठति ठहरता है	तिष्ठतः ठहरते हैं	तिष्ठन्ति=	तिष्ठसि ठहरते हो	तिष्ठथः =	तिष्ठथ=	तिष्ठामि ठहरता हूँ	तिष्ठावः ठहरते हैं	तिष्ठामः
पा ३	पिबति पीता है	पिबतः पीते हैं	पिबन्ति=	पिबसि पीते हो	पिबथः =	पिबथ =	पिबामि पीता हूँ	पिबावः पीते हैं	पिबामः
दृश् ४	पश्यति देखता है	पश्यतः देखते है	पश्यन्ति=	पश्यसि देखते हो	पश्यथः=	पश्यथ =	पश्यामि देखता हूँ	पश्यावः देखते हैं	पश्यामः
नी	नयति ले जाता है	नयतः ले जाते हैं	नयन्ति=	नयसि ले जाते हो	नयथः=	नयथ=	नयामि ले जाता हूँ	नयावः ले जाते हैं	नयामः
लिख्	लिखति लिखता है	लिखतः लिखते हैं	लिखन्ति=	लिखसि लिखते हो	लिखथः=	लिखथ=	लिखामि लिखता हूँ	लिखावः लिखते हैं	लिखामः
इष् ५	इच्छति चाहता है	इच्छतः चाहते हैं	इच्छन्ति=	इच्छसि चाहते हो	इच्छथः =	इच्छथ =	इच्छामि चाहता हूँ	इच्छावः चाहते हैं	इच्छामः
प्रच्छ्	पृच्छति पूछता है	पृच्छतः पूछते हैं	पृच्छन्ति=	पृच्छसि पूछते हो	पृच्छथः=	पृच्छथ=	पृच्छामि पूछता हूँ	पृच्छावः पूछते हैं	पृच्छामः
कथ	कथयति कहता है	कथयतः कहते हैं	कथयन्ति=	कथयसि कहते हो	कथयथः =	कथयथ=	कथयामि कहता हूँ	कथयावः कहते हैं	कथयामः
ज्ञा ६	जानाति जानता है	जानीतः जानते हैं	जानन्ति =	जानासि जानते हो	जानीथः =	जानीथ=	जानामि जानता हूँ	जानीवः जानते हैं	जानीमः
ग्रह	गृह्णाति लेता है	गृह्णीतः लेते हैं	गृह्णन्ति=	गृह्णासि लेते हो	गृह्णीथः=	गृह्णीथ=	गृह्णामि लेता हूँ	गृह्णीवः लेते हैं	गृह्णीमः
दा	ददाति देता है	दत्तः देते हैं	ददति=	ददासि देते हो	दत्थः=	दत्थ =	ददामि देता हूँ	दद्वः देते हैं	दद्मः
श्रु	शृणोति सुनता है	शृणुतः सुनते हैं	शृण्वन्ति=	शृणोषि सुनते हो	शृणुथः =	शृणुथ =	शृणोमि सुनता हूँ	शृण्वः सुनते हैं	शृण्मः
शक्	शक्नोति सकता है	शक्नुतः सकते हैं	शक्नुवन्ति=	शक्नोषि सकते हो	शक्नुथः=	शक्नुथ =	शक्नोमि सकता हूँ	शक्नुवः सकते हैं	शक्नुमः
प्रआप्	प्राप्नोति पाता है	प्राप्नुतः पाते हैं	प्राप्नुवन्ति=	प्राप्नोषि पाते हो	प्राप्नुथः=	प्राप्नुथ =	प्राप्नोमि पाता हूँ	प्राप्नुवः पाते हैं	प्राप्नुमः
जागृ	जागर्ति जागता है	जागृतः जागते हैं	जाग्रति=	जागर्षि जागते हो	जागृथः =	जागृथ =	जागर्मि जागता हूँ	जागृवः जागते हैं	जागृमः
आ०प्र०	त	आताम्	झ	थास्	आथाम्=	ध्वम् =	इट्	वहि	महिङ्
शी	शेते सोता है	शयाते सोते हैं	शेरते=	शेषे सोते हो	शयाथे =	शेध्वे=	शये सोता हूँ	शेवहे सोते हैं	शेमहे
याच्	याचते माँगता है	याचेते माँगते है	याचन्ते=	याचसे माँगते हो	याचेथे=	याचध्वे =	याचे मांगता हूँ	याचावहे माँगते हैं	याचामहे
मन्	मन्यते मानता है	मन्येते मानते हैं	मन्यन्ते=	मन्यसे मानते हो	मन्येथे=	मन्यध्वे=	मन्ये मानता हूँ	मन्यावहे मानते हैं	मन्यामहे

रात्रौ	रात्रि में
रूप्यकम्	रुपया
आज्ञाम्	आज्ञा

सूचना १—ऊपर के वर्त्तमान काल के रूपों में "स्म" लगा देने से भूतकाल का अर्थ हो जाता है। यथा—सः पठति स्म—वह पढ़ता था, सः करोति स्म, वह करता था इत्यादि।

२—१, २, ३, ४, ५, ६, ७ संख्यक धातुओं के लट्, लोट् लङ् एवं लिङ् लकार में क्रमशः गच्छ, तिष्ठ, पिब, पश्य, इच्छ, जा एवं शृणु ऐसे रूप हो जाते हैं।

३—उपर्युक्त धातुओं के कण्ठस्थ हो जाने के बाद पृष्ठ १८, १९ में लिखित धातुओं को भी कण्ठस्थ कर उनका प्रयोग करना चाहिये।

३---छात्रों तथा अध्यापकों को कुछ आवश्यक निर्देश

१—बायीं ओर वर्त्तमान काल के पृष्ठ में प्रथम पुरुष के कर्त्ता के रूप में दिये गये "सः तौ ते" के स्थान पर नीचे लिखे सभी सर्वनाम शब्दों, संख्यावाचक शब्दों, विशेषण शब्दों एवं संज्ञावाचक शब्दों के तीनों लिङ्गों के रूपों को अर्थ के साथ कण्ठस्थ कर इनका समस्त धातुरूपों के साथ प्रयोग करने का अभ्यास करना चाहिये। इसके बाद आगे के रूप पढ़ें।

	पुंलिङ्ग रूप			स्त्रीलिंग रूप			नपुंसकलिंग रूप		
सर्वनाम शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तत् वह	सः वह, उसने	तौ वे दोनों, उन दोनों ने	ते वे सब, उन सबों ने	सा	ते	ताः	तत्	ते	तानि
एतत्-यह	एषः यह, इसने	एतौ ये दोनों, इन दोनों ने	एते ये सब, इन सबों ने	एषा	एते	एताः	एतत्	एते	एतानि
यत्-जो	यः जो, जिसने	यौ जो दोनों, जिन दोनों ने	ये जो सब जिन सबों ने	या	ये	याः	यत्	ये	यानि
किम्-कौन	कः कौन, किसने	कौ कौन दो, किन दोनों ने	के कौन सब, किन सबों ने	का	के	काः	किम्	के	कानि
अदस्-वह	असौ वह, उसने	अमू वे दोनों, उन दोनों ने	अमी वे सब, उन सबों ने	असौ	अमू	अमूः	अदः	अमू	अमूनि
इदम्-यह	अयम् यह, इसने	इमौ ये दोनों, इन दोनों ने	इमे ये सब, इन सबों ने	इयम्	इमे	इमाः	इदम्	इमे	इमानि
भवत्-आप	भवान् आप, आपने	भवन्तौ आप दोनों, आप दोनों ने	भवन्तः आप सब, आपसबों ने	भवती	भवत्यौ	भवत्यः	भवत्	भवतो	भवन्ति
सर्व-सब	सर्वः सब, सबने	सर्वौ सब, सब दोनों ने	सर्वे सब, सब लोगों ने	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
किञ्चित्-कोई	कश्चित्, कोई, किसी ने	कौचित् कोई दोनों, किन्हीं,,	केचित् कुछ लोग, किन्हीं लोगों ने	काचित्	केचित्	काश्चित्	किञ्चित्	केचित्	कानिचित्
किञ्चत्-कोई	कश्चन ,,	कौचन ,,	केचन ,, ,,	काचन	केचन	काश्चन	किञ्चन	केचन	कानिचन
संख्या शब्द									
एक, द्वि, त्रि, चतुर्	एकः	द्वौ	त्रयः, चत्वारः	एका	द्वे	तिस्रःचतस्रः	एकम्	द्वे, त्रीणि, चत्वारि	
विशेषण शब्द									
	सुन्दरः	सुन्दरौ	सुन्दराः	सुन्दरी	सुन्दर्यौ	सुन्दर्यः	सुन्दरं	सुन्दरे	सुन्दराणि
	उत्तमः	उत्तमौ	उत्तमाः	उत्तमा	उत्तमे	उत्तमाः	उत्तमं	उत्तमे	उत्तमानि
संज्ञा शब्द	बालकः	बालकौ	बालकाः	बालिका	बालिके	बालिकाः	पुस्तकं	पुस्तके	पुस्तकानि
क्रियापद	अस्ति	स्तः	सन्ति	अस्ति	स्तः	सन्ति	अस्ति	स्तः	सन्ति

२—ऊपर एक से १० तक सर्वनाम शब्द के रूप हैं। उन्हीं के समान पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग संज्ञावाचक तथा विशेषण शब्दों के साथ भी क्रियापदों को जोड़कर वाक्य बनाने का अभ्यास करना चाहिए।

३—पृष्ठ दो में लिखे क्रमों के अनुसार छात्रों को प्रत्येक सकर्मक क्रिया के साथ अपनी बुद्धि से एक दो और कर्म लगाने का भी अभ्यास करना चाहिये।

४—पृष्ठ दो के अनुसार छात्रों को प्रत्येक अकर्मक क्रिया के साथ भी अपनी बुद्धि से एक दो संज्ञाशब्द तथा विशेषणशब्द लगाने का अभ्यास करना चाहिये।

५—एक कर्त्ता एवं एक क्रिया वाले वाक्य में किं (क्या) कुत्र (कहाँ) कथम् (कैसे) कदा (कब) किमर्थम् (किसलिये) आदि अव्ययों को जोड़कर प्रश्नवाचक वाक्य बनाने का अभ्यास करना चाहिये। इसी प्रकार "न" लगाकर निषेधवाचक तथा 'आम्' लगाकर स्वीकार वाचक वाक्य बनाने का अभ्यास करना चाहिये यथा—न शृणोमि, आम्, शृणोमि इत्यादि।

६—उपर्युक्त सभी निर्देशों के अनुसार वर्त्तमानकाल के वाक्यों का अनुवाद बनाने का अभ्यास हो जाने के बाद आगे के सभी कालों एवं लकारों में अनुवाद बनाना चाहिये।

७—धातुओं में उपसर्गों के लगने से उनका अर्थ बदल जाता है जैसे—गम् धातु में आ लगने से आगच्छति आता है, नी धातु में आ लगने से आनयति ले आता है, स्था धातु में उत् लगाने से उत्तिष्ठति उठता है, गम् धातु में अव लगने से अवगच्छति समझता है इत्यादि। उपसर्गों की विशेष जानकारी के लिए पृष्ठ २२ देखें और उसे ध्यान में रखें।

८—हिन्दी की क्रियाओं में लिङ्ग भेद होता है अतः संस्कृत क्रियाओं का हिन्दी अनुवाद करते समय इसका ध्यान रखना चाहिये।

४—भविष्यत् काल—लृट् लकार—कर्तृवाच्य के रूप

	प्रथम पुरुष के रूप			मध्यम पुरुष के रूप			उत्तम पुरुष के रूप		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प०प्र०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यामि	स्यावः	स्यामः
	सः वह	तौ वे दोनों	ते वे सब	त्वम् तुम	युवाम् तुम दोनों	यूयम् तुम सब	अहम् मैं	आवाम् हम दोनों	वयम् हम सब
कृ	करिष्यति करेगा	करिष्यतः करेंगे	करिष्यन्ति=	करिष्यसि करोगे	करिष्यथः=	करिष्यथ=	करिष्यामि करूँगा	करिष्यावः करेंगे	करिष्यामः=
भू	भविष्यति होगा	भविष्यतः होंगे	भविष्यन्ति=	भविष्यसि होगे	भविष्यथः=	भविष्यथ=	भविष्यामि होऊँगा	भविष्यावः होंगे	भविष्यामः=
पठ्	पठिष्यति पढ़ेगा	पठिष्यतः पढ़ेंगे	पठिष्यन्ति=	पठिष्यसि पढ़ोगे	पठिष्यथः=	पठिष्यथ=	पठिष्यामि पढ़ूँगा	पठिष्यावः पढ़ेंगे	पठिष्यामः=
वद्	वदिष्यति बोलेगा	वदिष्यतः बोलेंगे	वदिष्यन्ति=	वदिष्यसि बोलोगे	वदिष्यथः=	वदिष्यथ=	वदिष्यामि बोलूँगा	वदिष्यावः बोलेंगे	वदिष्यामः=
गम्	गमिष्यति जायेगा	गमिष्यतः जायेंगे	गमिष्यन्ति=	गमिष्यसि जाओगे	गमिष्यथः=	गमिष्यथ=	गमिष्यामि जाऊँगा	गमिष्यावः जायेंगे	गमिष्यामः=
स्था	स्थास्यति ठहरेगा	स्थास्यतः ठहरेंगे	स्थास्यन्ति=	स्थास्यसि ठहरोगे	स्थास्यथः=	स्थास्यथ=	स्थास्यामि ठहरूँगा	स्थास्यावः ठहरेंगे	स्थास्यामः=
पा	पास्यति पीयेगा	पास्यतः पीयेंगे	पास्यन्ति=	पास्यसि पीओगे	पास्यथः=	पास्यथ=	पास्यामि पीऊँगा	पास्यावः पीयेंगे	पास्यामः=
दृश्	द्रक्ष्यति लिखेगा	द्रक्ष्यतः देखेंगे	द्रक्ष्यन्ति=	द्रक्ष्यसि देखोगे	द्रक्ष्यथः=	द्रक्ष्यथ=	द्रक्ष्यामि देखूँगा	द्रक्ष्यावः देखेंगे	द्रक्ष्यामः=
नी	नेष्यति ले जायेगा	नेष्यतः ले जायेंगे	नेष्यन्ति=	नेष्यसि ले जाओगे	नेष्यथः=	नेष्यथ=	नेष्यामि ले जाऊँगा	नेष्यावः ले जायेंगे	नेष्यामः=
लिख्	लेखिष्यति लिखेगा	लेखिष्यतः लिखेंगे	लेखिष्यन्ति=	लेखिष्यसि लिखोगे	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ=	लेखिष्यामि लिखूँगा	लेखिष्यावः लिखेंगे	लेखिष्यामः=
इष्	एषिष्यति चाहेगा	एषिष्यतः चाहेंगे	एषिष्यन्ति=	एषिष्यसि चाहोगे	एषिष्यथ	एषिष्यथ=	एषिष्यामि चाहूँगा	एषिष्यावः चाहेंगे	एषिष्यामः=
प्रच्छ	प्रक्ष्यति पूछेगा	प्रक्ष्यतः पूछेंगे	प्रक्ष्यन्ति=	प्रक्ष्यसि पूछोगे	प्रक्ष्यथ=	प्रक्ष्यथ=	प्रक्ष्यामि पूछूँगा	प्रक्ष्यावः पूछेंगे	प्रक्ष्यामः=
कथ	कथयिष्यति कहेगा	कथयिष्यतः कहेंगे	कथयिष्यन्ति=	कथयिष्यसि कहोगे	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ=	कथयिष्यामि कहूँगा	कथयिष्यावः कहेंगे	कथयिष्यामः=
ज्ञा	ज्ञास्यति जानेगा	ज्ञास्यतः जानेंगे	ज्ञास्यन्ति=	ज्ञास्यसि जानोगे	ज्ञास्यथः=	ज्ञास्यथ=	ज्ञास्यामि जानूँगा	ज्ञास्यावः जानेंगे	ज्ञास्यामः=
ग्रह	ग्रहीष्यति लेगा	ग्रहीष्यतः लेंगे	ग्रहीष्यन्ति=	ग्रहीष्यसि लोगे	ग्रहीष्यथः=	ग्रहीष्यथ=	ग्रहीष्यामि लूँगा	ग्रहीष्यावः लेंगे	ग्रहीष्यामः=
दा	दास्यति देगा	दास्यतः देंगे	दास्यन्ति=	दास्यसि दोगे	दास्यथः=	दास्यथ=	दास्यामि दूँगा	दास्यावः देंगे	दास्यामः=
श्रु	श्रोष्यति सुनेगा	श्रोष्यतः सुनेंगे	श्रोष्यन्ति=	श्रोष्यसि सुनोगे	श्रोष्यथः=	श्रोष्यथ=	श्रोष्यामि सुनूँगा	श्रोष्यावः सुनेंगे	श्रोष्यामः=
शक्	शक्ष्यति सकेगा	शक्ष्यतः सकेंगे	शक्ष्यन्ति=	शक्ष्यसि सकोगे	शक्ष्यथः=	शक्ष्यथ=	शक्ष्यामि सकूँगा	शक्ष्यावः सकेंगे	शक्ष्यामः=
प्र-अप्	प्राप्स्यति पायेगा	प्राप्स्यतः पायेंगे	प्राप्स्यन्ति=	प्राप्स्यसि पाओगे	प्राप्स्यथः=	प्राप्स्यथ=	प्राप्स्यामि पाऊँगा	प्राप्स्यावः पायेंगे	प्राप्स्यामः=
जागृ	जागरिष्यति जागेगा	जागरिष्यतः जागेंगे	जागरिष्यन्ति	जागरिष्यसि जागोगे	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ=	जागरिष्यामि जागूँगा	जागरिष्यावः जागेंगे	जागरिष्यामः
आ०प्र०	स्यते	स्येते	स्यन्ते	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे	स्ये	स्यावहे	स्यामहे=
शी	शयिष्यते सोयेगा	शयिष्येते सोयेंगे	शयिष्यन्ते=	शयिष्यसे सोओगे	शयिष्येथे =	शयिष्यध्वे=	शयिष्ये सोऊँगा	शयिष्यावहे सोयेंगे	शयिष्यामहे=
याच्	याचिष्यते माँगेगा	याचिष्येते माँगेंगे	याचिष्यन्ते=	याचिष्यसे माँगोगे	याचिष्येथे =	याचिष्यध्वे=	याचिष्ये माँगूँगा	याचिष्यावहे माँगेंगे	याचिष्यामहे=
मन्	मंस्यते मानेगा	मंस्येते मानेंगे	मंस्यन्ते=	मंस्यसे मानोगे	मंस्येथे=	मंस्यध्वे =	मंस्ये मानूँगा	मंस्यावहे मानेंगे	मंस्यामहे=

सूचना—१—लृट् लकार में सभी धातुओं के रूप एक समान चलते हैं। विद्यार्थी इन्हें एक ही दिन में कण्ठस्थ कर सकते हैं।

२—प्रथम पुरुष में पुं० भवान् के साथ करेंगे, कीजियेगा तथा स्त्री० भवती के साथ करेंगी, कीजियेगा आदि रूप होंगे।

५—आज्ञा, प्रार्थना—लोट् लकार—कर्तृवाच्य के रूप

प्रथम पुरुष के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प०प्र०	तु	ताम्	अन्तु
	सः वह	तौ वे दोनों	ते वे सब
अस्	अस्तु होवे	स्ताम् होवें	सन्तु=
कृ	करोतु करे	कुरुताम् करें	कुर्वन्तु=
भू	भवतु होवे	भवताम् होवें	भवन्तु=
पठ्	पठतु पढ़े	पठताम् पढ़ें	पठन्तु =
वद्	वदतु बोले	वदताम् बोलें	वदन्तु =
गम्	गच्छतु जावे	गच्छताम् जावें	गच्छन्तु=
स्था	तिष्ठतु ठहरे	तिष्ठताम् ठहरें	तिष्ठन्तु =
पा	पिबतु पीये	पिबताम् पीयें	पिबन्तु =
दृश्	पश्यतु देखे	पश्यताम् देखें	पश्यन्तु=
नी	नयतु ले जावे	नयताम् ले जावें	नयन्तु=
लिख्	लिखतु लिखे	लिखताम् लिखें	लिखन्तु=
इष्	इच्छतु चाहे	इच्छताम् चाहें	इच्छन्तु=
प्रच्छ	पृच्छतु पूछे	पृच्छताम् पूछें	पृच्छन्तु=
कथ	कथयतु कहे	कथयताम् कहें	कथयन्तु =
ज्ञा	जानातु जाने	जानीताम् जानें	जानन्तु=
ग्रह	गृह्णातु लेवे	गृह्णीताम् लेवें	गृह्णन्तु =
दा	ददातु देवे	दत्ताम् देवें	ददतु=
श्रु	शृणोतु सुनो	शृणुताम् सुने	शृण्वन्तु =
शक्	शक्नोतु सके	शक्नुताम् सकें	शक्नुवन्तु =
प्रआप्	प्राप्नोतु पावे	प्राप्नुताम् पावें	प्राप्नुवन्तु=
जागृ	जागर्तु जागे	जागृताम् जागें	जाग्रतु =
आ०प्र०	ताम्	आताम्	अन्ताम्=
शी	शेताम् सोवे	शयाताम् सोवें	शेरताम्=
याच्	याचताम् मागे	याचेताम् मागें	याचन्ताम्=
मन्	मन्यताम् माने	मन्येताम् मानें	मन्यन्ताम्=

मध्यम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
हि	तम्	त
त्वम् तुम	युवाम् तुम दोनों	यूयम् तुम सब
एधि होवो	स्तम् =	स्त=
कुरु करो	कुरुतम्=	कुरुत=
भव होवो	भवतम्=	भवत=
पठ पढ़ो	पठतम्=	पठत=
वद बोलो	वदतम्=	वदत
गच्छ जाओ	गच्छतम्=	गच्छत=
तिष्ठ ठहरो	तिष्ठतम् =	तिष्ठत=
पिब पीओ	पिबतम्	पिबत=
पश्य देखो	पश्यतम्=	पश्यत=
नय ले जाओ	नयतम्=	नयत=
लिख लिखो	लिखतम्	लिखत=
इच्छ चाहो	इच्छतम्	इच्छत=
पृच्छ पूछो	पृच्छतम्=	पृच्छत=
कथय कहो	कथयतम् =	कथयत=
जानीहि जानो	जानीतम् =	जानीत=
गृहाण लो	गृह्णीतम्=	गृह्णीत=
देहि दो	दत्तम्=	दत्त=
शृणु सुनो	शृणुतम्	शृणुत =
शक्नुहि सको	शक्नुतम्=	शक्नुत=
प्राप्नुहि पाओ	प्राप्नुतम्=	प्राप्नुत=
जागृहि जागो	जागृतम्=	जागृत =
स्व	आथाम्=	ध्वम्=
शेष्व सोओ	शयाथाम्=	शेध्वम्=
याचस्व माँगो	याचेथाम्=	याचध्वम=
मन्यस्व मानो	मन्येथाम् =	मन्यध्वम्=

उत्तम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
आनि	आव	आम	
अहम् मैं	आवाम् हम दोनों	वयम् हम सब	
असानि होऊँ	असाव होवें	असाम	योग्यः
करवाणि करूँ	करवाव करें	करवाम	श्रमम्
भवानि होऊँ	भवाव होवें	भवाम	विद्वान्
पठानि पढ़ूँ	पठाव पढ़ें	पठाम	पुस्तकम्
वदानि बोलूँ	वदाव बोलें	वदाम	प्रियम्
गच्छानि जाऊँ	गच्छाव जावें	गच्छाम	आपणम्
तिष्ठानि ठहरूँ	तिष्ठाव ठहरें	तिष्ठाम	विद्यालये
पिबानि पीऊँ	पिबाव पीयें	पिबाम	जलम्
पश्यानि देखूँ	पश्याव देखें	पश्याम	दृश्यम्
नयानि ले जाऊँ	नयाव ले जावें	नयाम	ग्रन्थम्
लिखानि लिखूँ	लिखाव लिखें	लिखाम	पद्यम्
इच्छानि चाहूँ	इच्छाव चाहें	इच्छाम	ज्ञानम्
पृच्छानि पूछूँ	पृच्छाव पूछें	पृच्छाम	प्रश्नम्
कथयानि कहूँ	कथयाव कहें	कथयाम	वृत्तम्
जानानि जानूँ	जानाव जानें	जानाम	हिन्दीम्
गृह्णानि लूँ	गृह्णाव लें	गृह्णाम	शिक्षाम्
ददानि दूँ	ददाव देवें	ददाम	द्रव्यम्
शृणवानि सुनूँ	शृणवाव सुनें	शृणवाम	उपदेशम्
शक्नवानि सकूँ	शक्नवाव सकें	शक्नवाम	पठितुम्
प्राप्नवानि पाऊँ	प्राप्नवाव पावें	प्राप्नवाम	पुरस्कारम्
जागराणि जागूँ	जागराव जागें	जागराम	उषसि
ऐ	आवहै	आमहै	
शयै सोऊँ	शयावहै सोवें	शयामहै	आसने
याचै मागूँ	याचावहै मागें	याचामहै	द्रव्यम्
मन्यै मानूँ	मन्यावहै मानें	मन्यामहै	आदेशम्

सूचना—प्रथम पुरुष में पुं० में भवान् तथा स्त्री० भवती (आप) के साथ हिन्दी में होवें, होइए, करें—कीजिये, पढ़े—पढ़िये आदि रूप होगें।

६—विधि, प्रार्थना—लिङ् लकार—कर्तृवाच्य के रूप

प्रथम पुरुष के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प०प्र०	यात्-इत्	याताम्-इताम्	युस्-स्युः
	सः वह	तौ वे दोनों	ते वे सब
अस्	स्यात् होवे, हो	स्याताम् होवें	स्युः=
कृ	कुर्यात् करे	कुर्याताम्	कुर्युः=
भू	भवेत् होवे	भवेताम् होवें	भवेयुः=
पठ्	पठेत् पढ़े	पठेताम् पढ़ें	पठेयुः=
वद्	वदेत् बोले	वदेताम् बोलें	वदेयुः=
गम्	गच्छेत् जावे	गच्छेताम् जावें	गच्छेयुः=
स्था	तिष्ठेत् ठहरे	तिष्ठेताम् ठहरें	तिष्ठेयुः=
पा	पिबेत् पीवे	पिबेताम् पीवें	पिबेयुः=
दृश्	पश्येत् देखे	पश्येताम् देखें	पश्येयुः=
नी	नयेत् ले जावे	नयेताम् ले जावें	नयेयुः=
लिख्	लिखेत् लिखे	लिखेताम् लिखें	लिखेयुः=
इष्	इच्छेत् चाहे	इच्छेताम् चाहें	इच्छेयुः=
प्रच्छ	पृच्छेत् पूछे	पृच्छेताम् पूछें	पृच्छेयुः=
कथ्	कथयेत् कहे	कथयेताम् कहें लेवें	कथयेयुः=
ज्ञा	जानीयात् जाने	जानीयाताम् जानें	जानीयुः
ग्रह्	गृह्णीयात् लेवे	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः=
दा	दद्यात् देवे	दद्याताम् देवें	दद्युः=
श्रु	शृणुयात् सुने	शृणुयाताम् सुनें	शृणुयुः
शक्	शक्नुयात् सके	शक्नुयाताम् सकें	शक्नुयुः=
प्रआप्	प्राप्नुयात् पावे	प्राप्नुयाताम् पावें	प्राप्नुयुः=
जागृ	जागृयात् जागे	जागृयाताम् जागें	जागृयुः=
आ०प्र०	ईत	ईयाताम्	ईरन्=
शी	शयीत सोवे	शयीयाताम् सोवें	शयीरन्=
याच्	याचेत मांगे	याचेयाताम् मांगे	याचेरन्=
मन्	मन्येत माने	मन्येयाताम् मानें	मन्येरन्=

मध्यम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
यास्-इः	यातम्-इतम्	यात-इत
त्वम् तुम	युवाम् तुम दोनों	यूयम् तुम सब
स्याः होना	स्यातम्=	स्यात=
कुर्याः करना	कुर्यातम्=	कुर्यात=
भवेः होना	भवेतम्=	भवेत=
पठेः पढ़ना	पठेतम्=	पठेत=
वदेः बोलना	वदेतम्=	वदेत=
गच्छेः जाना	गच्छेतम्=	गच्छेत=
तिष्ठेः ठहरना	तिष्ठेतम्=	तिष्ठेत=
पिबेः पीना	पिबेतम्=	पिबेत=
पश्येः देखना	पश्येतम्=	पश्येत=
नयेः ले जाना	नयेतम्=	नयेत=
लिखेः लिखाना	लिखेतम्=	लिखेत=
इच्छेः चाहना	इच्छेतम्=	इच्छेत=
पृच्छेः पूछना	पृच्छेतम्=	पृच्छेत=
कथयेः कहना	कथयेतम्=	कथयेत=
जानीयाः जानना	जानीयातम्=	जानीयात=
गृह्णीयाः लेना	गृह्णीयातम्=	गृह्णीयात=
दद्याः देना	दद्यातम्=	दद्यात=
शृणुयाः सुनना	शृणुयातम्=	शृणुयात=
शक्नुयाः सकना	शक्नुयातम्=	शक्नुयात=
प्राप्नुयाः पाना	प्राप्नुयातम्	प्राप्नुयात=
जागृयाः जागना	जागृयातम्	जागृयात=
ईथास्	ईयाथाम्	ईध्वम्=
शयीथाः सोना	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
याचेथाः माँगना	याचेयाथाम्	याचेध्वम्=
मन्येथाः मानना	मन्येयाथाम्	मन्येध्वम्=

उत्तम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
याम्-इयम्	याव-इव	याम-इम
अहम् मैं	आवाम् हम दोनों	वयम् हम सब
स्याम् होऊँ	स्याव होवें	स्याम=
कुर्याम् करूँ	कुर्याव करें	कुर्याम=
भवेयम् होऊँ	भवेव होवें	भवेम=
पठेयम् पढ़ूँ	पठेव पढ़े	पठेम=
वदेयम् बोलूँ	वदेव बोलें	वदेम=
गच्छेयम् जाऊँ	गच्छेव जावें	गच्छेम=
तिष्ठेयम् ठहरूँ	तिष्ठेव ठहरें	तिष्ठेम=
पिबेयम् पीऊँ	पिबेव पीवें	पिबेम=
पश्येयम् देखूँ	पश्येव देखें	पश्येम=
नयेयम् ले जाऊँ	नयेव ले जावें	नयेम=
लिखेयम् लिखूँ	लिखेव लिखें	लिखेम=
इच्छेयम् चाहूँ	इच्छेव चाहें	इच्छेम=
पृच्छेयम् पूछूँ	पृच्छेव पूछें	पृच्छेम=
कथयेयम् कहूँ	कथयेव कहें	कथयेम=
जानीयाम् जानूँ	जानीयाव जानें	जानीयाम=
गृह्णीयाम् लूँ	गृह्णीयाव लें	गृह्णीयाम=
दद्याम् दूँ	दद्याव दें	दद्याम=
शृणुयाम् सुनूँ	शृणुयाव सुनें	शृणुयाम=
शक्नुयाम् सकूँ	शक्नुयाव सकें	शक्नुयाम=
प्राप्नुयाम् पाऊँ	प्राप्नुयाव पावें	प्राप्नुयाम=
जागृयाम् जागूँ	जागृयाव जागें	जागृयाम=
ईय	ईवहि	ईमहि=
शयीय सोऊँ	शयीवहि सोवें	शयीमहि=
याचेय माँगूँ	याचेवहि माँगें	याचेमहि=
मन्येय मानूँ	मन्येवहि मानें	मन्येमहि=

(प्रथम पुरुष में पु० भवान् स्त्री० भवती भवान् (आप) के साथ हिन्दी में हों, होवें, करें, पढ़ें, लिखें आदि रूप होंगे।)

७—भूतकाल –लङ्लकार—कर्तृवाच्य के रूप। (लङ्लकारके कर्ता में "ने" चिह्न कहाँ लगेगा और कहाँ नहीं इसे हिन्दी व्याकरण से अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

प्रथम पुरुष के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प०प्र०	त्	ताम्	अन्
	सः वह, उसने	तौ वे दोनों	ते वे सब
अस्	आसीत् था	आस्ताम् थे	आसन् =
कृ	अकरोत् किया	अकुरुताम्=	अकुर्वन् =
भू	अभवत् हुआ	अभवताम् हुए	अभवन्=
पठ्	अपठत् पढ़ा	अपठताम्=	अपठन् =
वद्	अवदत् बोला	अवदताम् बोले	अवदन्=
गम्	अगच्छत् गया	अगच्छताम् गये	अगच्छन्
स्था	अतिष्ठत् ठहरा	अतिष्ठताम् ठहरे	अतिष्ठन्
पा	अपिबत् पिया	अपिबताम्	अपिबन्
दृश्	अपश्यत् देखा	अपश्यताम् =	अपश्यन्=
नी	अनयत् ले गया	अनयताम् =	अनयन्=
लिख्	अलिखत् लिखा	अलिखताम्=	अलिखन्=
इष्	ऐच्छत् चाहा	ऐच्छताम्=	ऐच्छन् =
प्रच्छ	अपृच्छत् पूछा	अपृच्छताम्=	अपृच्छन्=
कथ	अकथयत् कहा	अकथयताम् -	अकथयन्=
ज्ञा	अजानात् जाना	अजानीताम्=	अजानन्=
ग्रह्	अगृह्णात् लिया	अगृह्णीताम्=	अगृह्णन्=
दा	अददात् दिया	अदत्ताम् =	अददुः=
श्रु	अश्रृणोत् सुना	अश्रृणुताम् =	अश्रृण्वन्=
शक्	अशक्नोत् सका	अशक्नुताम् सके	अशक्नुवन्=
प्रआप्	प्राप्नोत् पाया	प्राप्नुताम् =	प्राप्नुवन्=
जागृ	अजागः जागा	अजागृताम्=	अजागरुः=
आ०प्र०	त	इताम्	अन्त
शी	अशेत सोया	अशयाताम् सोये	अशेरत=
याच	अयाचत मांगा	अयाचेताम् =	अयाचन्त =
मन्	अमन्यत माना	अमन्येताम् =	अमन्यन्त =

मध्यम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
स्	तम्	त
त्वम् तुम तुमने	युवाम् तुम दोनों	यूयम् तुम सब
आसीःथे	आस्तम्=	आस्त=
अकरोः	अकुरुतम् =	अकुरुत=
अभवः हुए	अभवतम्=	अभवत=
अपठः पढ़ा	अपठतम्=	अपठत=
अवदः बोले	अवदतम् =	अवदत=
अगच्छः गये	अगच्छतम् =	अगच्छत =
अतिष्ठः ठहरे	अतिष्ठतम्=	अतिष्ठत=
अपिबः पिया	अपिबतम्=	अपिबत=
अपश्यः देखा	अपश्यतम्=	अपश्यत=
अनयः ले गये	अनयतम् =	अनयत =
अलिखः लिखा	अलिखतम् =	अलिखत=
ऐच्छः चाहा	ऐच्छतम्=	ऐच्छत=
अपृच्छः पूछा	अपृच्छतम् =	अपृच्छत=
अकथयः कहा	अकथयतम्=	अकथयत =
अजानाः जाना	अजानीतम्—	अजानीत—
अगृह्णाः लिया	अगृह्णीतम्—	अगृह्णीत—
अददाः दिया	अदत्तम् —	अदत्त —
अश्रृणोः सुना	अश्रृणुतम्—	अश्रृणुत—
अशक्नोः सके	अशक्नुतम्—	अशक्नुत—
प्राप्नोः पाया	प्राप्नुतम्—	प्राप्नुत—
अजागः जागे	अजागृतम्—	अजागृत—
थास्	इथाम्	ध्वम्—
अशेथाः सोये	अशयाथाम्—	अशेध्वम्—
अयाचथाः माँगा	अयाचेथाम्—	अयाचध्वम्—
अमन्यथाः माना	अमन्येथाम्—	अमन्यध्वम्—

उत्तम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म्	व	म
अहम् मैं, मैने	आवाम् हम दोनों	वयम् हम सब
आसम् था	आस्व थे	आस्म—
अकरवम् किया	अकुर्व	अकुर्म —
अभवम् हुआ	अभवाव	अभवाम —
अपठम् पढ़ा	अपठाव —	अपठाम—
अवदम् बोला	अवदाव—	अवदाम—
अगच्छम् गया	अगच्छाव—	अगच्छाम—
अतिष्ठम् ठहरा	अतिष्ठाव —	अतिष्ठाम—
अपिबम् पिया	अपिबाव—	अपिबाम—
अपश्यम् देखा	अपश्याव—	अपश्याम —
अनयम् ले गया	अनयाव —	अनयाम—
अलिखम् लिखा	अलिखाव—	अलिखाम—
ऐच्छम् चाहा	ऐच्छाव —	ऐच्छाम—
अपृच्छम् पूछा	अपृच्छाव—	अपृच्छाम—
अकथयम् कहा	अकथयाव—	अकथयाम—
अजानाम् जाना	अजानीव—	अजानीम—
अगृह्णाम् लिया	अगृह्णीव—	अगृह्णीम—
अददाम् दिया	अदद्व —	अदद्म—
अश्रृणवम् सुना	अश्रृणुव—	अश्रृणुम—
अशक्नुवम् सका	अशक्नुव सके	अशक्नुम—
प्राप्नुवम् पाया	प्राप्नुव—	प्राप्नुम—
अजागरम् जागा	अजागृव—	अजागृम—
इ	वहि	महि—
अशयि सोया	अशेवहि—	अशेमहि—
अयाचे माँगा	अयाचावहि	अयाचामहि—
अमन्ये माना	अमन्यावहि	अमन्यामहि —

सूचना—१—यद्यपि लङ्लकार का प्रयोग अनद्यतन भूतकाल में होता है परन्तु वर्तमान प्रचलन के अनुसार सुविधा की दृष्टि से यहाँ सामान्य भूतकाल में ही प्रयोग किया गया है। विद्यार्थी भूतकाल के बोधक लिट् तथा लुङ् लकार के भी रूप परिशिष्ट में देखें तथा उन्हें भी कण्ठस्थ कर लें।

२—प्रथम पुरुष में भवान्, भवती के साथ थे—थीं, गये—गयीं, हुए—हुई, सके सकीं तथा बोले—बोलीं आदि रूप होगें।

८—हेतुहेतुमद्भूत—लृङ्लकार—कर्तृवाच्य के रूप

प्रथम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प०प्र० स्यत्	स्यताम्	स्यन्
सः वह	तौ वे दोनों	ते वे सब
अकरिष्यत् करता	अकरिष्यताम् करते	अकरिष्यन्—
अभविष्यत् होता	अभविष्यताम् होते	अभविष्यन्—
अपठिष्यत् पढ़ता	अपठिष्यताम् पढ़ते	अपठिष्यन्—
अवदिष्यत् बोलता	अवदिष्यताम् बोलते	अवदिष्यन्—
अगमिष्यत् जाता	अगमिष्यताम् जाते	अगमिष्यन्—
अस्थास्यत् ठहरता	अस्थास्यताम् ठहरते	अस्थास्यन्—
अपास्यत् पीता	अपास्यताम् पीते	अपास्यन्—
अद्रक्ष्यत् देखता	अद्रक्ष्यताम् देखते	अद्रक्ष्यन्—
अनेष्यत् ले जाता	अनेष्यताम् ले जाते	अनेष्यन्—
अलेखिष्यत् लिखता	अलेखिष्यताम् लिखते	अलेखिष्यन्—
ऐषिष्यत् चाहता	ऐषिष्यताम् चाहते	ऐषिष्यन्—
अप्रक्ष्यत् पूछता	अप्रक्ष्यताम् पूछते	अप्रक्ष्यन्—
अकथयिष्यत् कहता	अकथयिष्यताम् कहते	अकथयिष्यन्
अज्ञास्यत् जानता	अज्ञास्यताम् जानते	अज्ञास्यन्—
अग्रहीष्यत् लेता	अग्रहीष्यताम्	अग्रहीष्यन्—
अदास्यत् देता	अदास्यताम् देते	अदास्यन्—
अश्रोष्यत् सुनता	अश्रोष्यताम् सुनते	अश्रोष्यन्—
अशक्ष्यत् सकता	अशक्ष्यताम् सकते	अशक्ष्यन्—
प्राप्स्यत् पाता	प्राप्स्यताम् पाते	प्राप्स्यन्—
अजागरिष्यत् जागता	अजागरिष्यताम् जागते	अजागरिष्यन्
आ० प्र० स्यत	स्येताम्	स्यन्त
अशयिष्यत सोता	अशयिष्येताम् सोते	अशयिष्यन्त—
अयाचिष्यत मागता	अयाचिष्येताम्	अयाचिष्यन्त—
अमंस्यत मानता	अमंस्येताम् मानते	अमंस्यन्त—

मध्यम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
स्यस्	स्यतम्	स्यत
त्वम् तुम	युवाम् तुम दोनों	यूयम् तुम सब
अकरिष्य करते	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत—
अभविष्यः होते	अभविष्यतम्	अभविष्यत—
अपठिष्यः पढ़ते	अपठिष्यतम्	अपठिष्यत—
अवदिष्यः बोलते	अवदिष्यतम्	अवदिष्यत—
अगमिष्यः जाते	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत—
अस्थास्यः ठहरते	अस्थास्यतम्	अस्थास्यत—
अपास्यः पीते	अपास्यतम्	अपास्यत—
अद्रक्ष्यः देखते	अद्रक्ष्यतम्	अद्रक्ष्यत—
अनेष्यः ले जाते	अनेष्यतम्	अनेष्यत—
अलेखिष्यः लिखते	अलेखिष्यतम्	अलेखिष्यत—
ऐषिष्यः चाहते	ऐषिष्यतम्	ऐषिष्यत—
अप्रक्ष्यः पूछते	अप्रक्ष्यतम्	अप्रक्ष्यत—
अकथयिष्यः कहते	अकथयिष्यतम्	अकथयिष्यत—
अज्ञास्यः जानते	अज्ञास्यतम्	अज्ञास्यत—
अग्रहीष्यः लेते	अग्रहीष्यतम्	अग्रहीष्यत—
अदास्यः देते	अदास्यतम्	अदास्यत—
अश्रोष्यः सुनते	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत—
अशक्ष्यः सकते	अशक्ष्यतम्	अशक्ष्यत—
प्राप्स्यः पाते	प्राप्स्यतम्	प्राप्स्यत—
अजागरिष्यः जागते	अजागरिष्यतम्	अजागरिष्यत—
स्थथास्	स्येथाम्	स्यध्वम्—
अशयिष्यथाः सोते	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्—
अयाचिष्यथाः माँगते	अयाचिष्येथाम्	अयाचिष्यध्वम्—
अमंस्यथाः मानते	अमंस्येथाम्	अमंस्यध्वम्—

उत्तम पुरुष के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
स्यम्	स्याव	स्याम
अहम् मैं	आवाम् हम दोनों	वयम् हम सब
अकरिष्यम् करता	अकरिष्याव करते	अकरिष्याम—
अभविष्यम् होता	अभविष्याव होते	अभविष्याम—
अपठिष्यम् पढ़ता	अपठिष्याव पढ़ते	अपठिष्याम—
अवदिष्यम् बोलता	अवदिष्याव बोलते	अवदिष्याम—
अगमिष्यम् जाता	अगमिष्याव जाते	अगमिष्याम—
अस्थास्यम् ठहरता	अस्थास्याव ठहरते	अस्थास्याम—
अपास्यम् पीता	अपास्याव पीते	अपास्याम—
अद्रक्ष्यम् देखता	अद्रक्ष्याव देखते	अद्रक्ष्याम—
अनेष्यम् ले जाता	अनेष्याव ले जाते	अनेष्याम—
अलेखिष्यम् लिखता	अलेखिष्याव लिखते	अलेखिष्याम—
ऐषिष्यम् चाहता	ऐषिष्याव चाहते	ऐषिष्याम—
अप्रक्ष्यम् पूछता	अप्रक्ष्याव	अप्रक्ष्याम—
अकथयिष्यम् कहता	अकथयिष्याव कहते	अकथयिष्याम—
अज्ञास्यम् जानता	अज्ञास्याव जानते	अज्ञास्याम—
अग्रहीष्यम् लेता	अग्रहीष्याव लेते	अग्रहीष्याम—
अदास्यम् देता	अदास्याव देते	अदास्याम—
अश्रोष्यम् सुनता	अश्रोष्याव सुनते	अश्रोष्याम—
अशक्ष्यम् सकता	अशक्ष्याव सकते	अशक्ष्याम—
प्राप्स्यम् पाता	प्राप्स्याव पाते	प्राप्स्याम—
अजागरिष्यम् जागता	अजागरिष्याव जागते	अजागरिष्याम
स्ये	स्यावहि	स्यामहि
अशयिष्ये सोता	अशयिष्यावहि सोते	अशयिष्यामहि
अयाचिष्ये माँगता	अयाचिष्यावहि माँगते	अयाचिष्यामहि
अमंस्ये मानता	अमंस्यावहि मानते	अमंस्यामहि

सूचना—१—इस लकार के प्रयोग में एक ही वाक्य में दो क्रियाओं का प्रयोग होता है—यथा—यदि वह पढ़ता तो अवश्य उत्तीर्ण होता—यदि सः अपठिष्यत् तदा अवश्यम् उत्तीर्णः अभविष्यत् ।

२—प्रथम पुरुष में भवान् और भवती के साथ करते—करतीं, होते—होतीं, पढ़ते—पढ़तीं और बोलना—बोलतीं आदि रूप होंगे ।

९—णिजन्त (प्रेरणार्थक) धातु और उनके कर्तृवाच्य में छ लकारों के रूप। मूल धातु में णिच् (इ) प्रत्यय लगाने से प्रेरणार्थक क्रियायें बनती हैं। प्रत्यय लगाने पर मूल धातु में गुण, वृद्धि आदि विकार हो जाते हैं। इनके रूप कथ धातु के समान चलेंगे। णिजन्त क्रियायें प्रायः उभयपदी होती हैं।

धातु	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
कृ-कारि	कारयति कराता है	कारयिष्यति करायेगा	कारयतु करावे	कारयेत्=	अकारयत् कराया	अकारयिष्यत् कराता
पठ-पाठि	पाठयति पढ़ाता है	पाठयिष्यति पढ़ायेगा	पाठयतु पढ़ावे	पाठयेत्=	अपाठयत् पढ़ाया	अपाठयिष्यत् पढ़ाता
वद-वादि	वादयति बजाता है	वादयिष्यति बजायेगा	वादयतु बजावे	वादयेत्=	अवादयत् बजाया	अवादयिष्यत् बजाता
गम्-गमि	गमयति बिताता है	गमयिष्यति बितायेगा	गमयतु बितावे	गमयेत्=	अगमयत् बिताया	अगमयिष्यत् बिताता
स्था-स्थापि	स्थापयति रखता है	स्थापयिष्यति रखेगा	स्थापयतु रखे	स्थापयेत्=	अस्थापयत् रखा	अस्थापयिष्यत् रखता
पा-पायि	पाययति पिलाता है	पाययिष्यति पिलायेगा	पाययतु पिलावे	पाययेत्=	अपाययत् पिलाया	अपाययिष्यत् पिलाता
दृश-दर्शि	दर्शयति दिखाता है	दर्शयिष्यति दिखायेगा	दर्शयतु दिखावे	दर्शयेत्=	अदर्शयत् दिखाया	अदर्शयिष्यत् दिखाता
नी-नायि	नाययति लिवा जाता है	नाययिष्यति लिवा जायेगा	नाययतु लिवा जावे	नाययेत्=	अनाययत् लिवा गया	अनाययिष्यत् लिवा जाता
लिख-लेखि	लेखयति लिखाता है	लेखयिष्यति लिखायेगा	लेखयतु लिखावे	लेखयेत्=	अलेखयत् लिखाया	अलेखयिष्यत् लिखाता
प्रच्छ-प्रच्छि	प्रच्छयति पुछवाता है	प्रच्छयिष्यति पुछवायेगा	प्रच्छयतु पुछवावे	प्रच्छयेत्=	अप्रच्छयत् पुछवाया	अप्रच्छयिष्यत् पुछवाता
कथ-कथि	कथयति कहवाता है	कथयिष्यति कहलायेगा	कथयतु कहलावे	कथयेत्=	अकथयत् कहलाया	अकथयिष्यत् कहलाता
ज्ञा-ज्ञापि	ज्ञापयति जनाता है	ज्ञापयिष्यति जनायेगा	ज्ञापयतु जनावे	ज्ञापयेत्=	अज्ञापयत् जनाया	अज्ञापयिष्यत् जनाता
दा-दापि	दापयति दिलाता है	दापयिष्यति दिलायेगा	दापयतु दिलावे	दापयेत्=	अदापयत् दिलाया	अदापयिष्यत् दिलाता
श्रु-श्रावि	श्रावयति सुनाता है	श्रावयिष्यति सुनायेगा	श्रावयतु सुनावे	श्रावयेत्=	अश्रावयत् सुनाया	अश्रावयिष्यत् सुनाता
प्राप-प्रापि	प्रापयति पहुँचाता है	प्रापयिष्यति पहुँचायेगा	प्रापयतु पहुँचावे	प्रापयेत्=	प्रापयत् पहुँचाया	प्रापयिष्यत् पहुँचाता
जागृ-जागरि	जागरयति जगाता है	जागरयिष्यति जगायेगा	जागरयतु जगावे	जागरयेत्=	अजागरयत् जगाया	अजागरयिष्यत् जगाता
शी-शायि	शाययति सुलाता है	शाययिष्यति सुलायेगा	शाययतु सुलावे	शाययेत्=	अशाययत् सुलाया	अशाययिष्यत् सुलाता
मन्-मानि	मानयति मनाता है	मानयिष्यति मनायेगा	मानयतु मनावे	मानयेत्=	अमानयत् मनाया	अमानयिष्यत् मनाता
शिक्ष-शिक्षि	शिक्षयति सिखाता है	शिक्षयिष्यति सिखायेगा	शिक्षयतु सिखावे	शिक्षयेत्=	अशिक्षयत् सिखाया	अशिक्षयिष्यत् सिखाता
उद्घट-उद्घाटि	उद्घाटयति खोलता है	उद्घाटयिष्यति खोलेगा	उद्घाटयतु खोले	उद्घाटयेत्=	उदघाटयत् खोला	उदघाटयिष्यत् खोलता
ज्वल-ज्वालि	ज्वालयति जलाता है	ज्वालयिष्यति जलायेगा	ज्वालयतु जलावे	ज्वालयेत्=	अज्वालयत् जलाया	अज्वालयिष्यत् जलाता
निर्वा-निर्वापि	निर्वापयति बुझाता है	निर्वापयिष्यति बुझायेगा	निर्वापयतु बुझावे	निर्वापयेत्=	निरवापयत् बुझाया	निरवापयिष्यत् बुझाता
आनी-आनायि	आनाययति मँगाता है	आनायिष्यति मँगायेगा	आनाययतु मँगावे	आनाययेत्=	आनाययत् मँगाया	आनायिष्यत् मँगाता
उत्स्था-उत्थापि	उत्थापयति उठाता है	उत्थापयिष्यति उठायेगा	उत्थापयतु उठावे	उत्थापयेत्=	उदस्थापयत् उठाया	उदस्थापयिष्यत् उठाता
प्रेष-प्रेषि	प्रेषयति भेजता है	प्रेषयिष्यति भेजेगा	प्रेषयतु भेजे	प्रेषयेत्=	अप्रेषयत् भेजा	अप्रेषयिष्यत् भेजता

इसी प्रकार उपवेशयति—बैठाता है, भोजयति—खिलाता है, आकारयति बुलाता है, अपसारयति—हटाता है, दोलयति—डुलाता है, सीवयति—सिलाता है, निवर्तयति—लौटाता है, परिवर्तयति—बदलता है, गोपयति—छिपाता है, बोधयति—समझाता है, चालयति—चलाता है, मेलयति—मिलाता है, पातयति—गिराता है आदि रूपों का भी प्रयोग करना चाहिये।

१०—कर्मवाच्य के रूप—(सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में धातु के आगे यक् (य) प्रत्यय होता है और सदा आत्मनेपद का प्रयोग होता है। रूप मन् धातु के समान चलेंगे। कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्मानुसार होती है। यथा—छात्रेण पाठः पठ्यते, छात्रेण पाठौ पठ्येते, छात्रेण पाठाः पठ्यन्ते इत्यादि।)

धातु	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
कृ	क्रियते किया जाता है	करिष्यते किया जायगा	क्रियताम् किया जाय	क्रियेत =	अक्रियत किया गया	अकरिष्यत किया जाता
पठ	पठ्यते पढ़ा जाता है	पठिष्यते पढ़ा जायगा	पठ्यताम् पढ़ा जाय	पठ्येत =	अपठ्यत पढ़ा गया	अपठिष्यत पढ़ा जाता
गम्	गम्यते जाया जाता है	गंस्यते जाया जायगा	गम्यताम् जाया जाय	गम्येत =	अगम्यत जाया गया	अगंस्यत जाया जाता
पा	पीयते पीया जाता है	पास्यते पीया जायगा	पीयताम् पीया जाय	पीयेत =	अपीयत पीया गया	अपास्यत पीया जाता
दृश्	दृश्यते देखा जाता है	द्रक्ष्यते देखा जायगा	दृश्यताम् देखा जाय	दृश्येत =	अदृश्यतदेखा गया	अद्रक्ष्यत देखा जाता
नी	नीयते ले जाया जाता है	नेष्यते ले जाया जायगा	नीयताम् ले जाया जाय	नीयेत =	अनीयत ले जाया गया	अनेष्यत ले जाया जाता
लिख	लिख्यते लिखा जाता है	लेखिष्यते लिखा जायगा	लिख्यताम् लिखा जाय	लिख्येत =	अलिख्यत लिखा गया	अलेखिष्यत लिखा जाता
इष्	इष्यते चाहा जाता है	एषिष्यते चाहा जायगा	इष्यताम् चाहा जाय	इष्येत =	ऐष्यत चाहा गया	ऐषिष्यत चाहा जाता
प्रच्छ	पृच्छ्यते पूछा जाता है	प्रक्ष्यते पूछा जायगा	पृच्छ्यताम् पूछा जाय	पृच्छ्येत =	अपृच्छ्यत पूछा गया	अप्रक्ष्यत पूछा जाता
कथ	कथ्यते कहा जाता है	कथयिष्यते कहा जायगा	कथ्यताम् कहा जाय	कथ्येत =	अकथ्यत कहा गया	अकथयिष्यत कहा जाता
ज्ञा	ज्ञायते जाना जाता है	ज्ञास्यते जाना जायगा	ज्ञायताम् जाना जाय	ज्ञायेत =	अज्ञायत जाना गया	अज्ञास्यत जाना जाता
ग्रह	गृह्यते लिया जाता है	ग्रहीष्यते लिया जायगा	गृह्यताम् लिया जाय	गृह्येत =	अगृह्यत लिया गया	अग्रहीष्यत लिया जाता
दा	दीयते दिया जाता है	दास्यते दिया जायगा	दीयताम् दिया जाय	दीयेत =	अदीयत दिया गया	अदास्यत दिया जाता
श्रु	श्रूयते सुना जाता है	श्रोष्यते सुना जायगा	श्रूयताम् सुना जाय	श्रूयेत=	अश्रूयत सुना गया	अश्रोष्यत सुना जाता
शक्	शक्यते सका जाता है	शक्ष्यते सका जायगा	शक्यताम् सका जाय	शक्येत=	अशक्यत सका गया	अशक्ष्यत सका जाता
प्राप्	प्राप्यते पाया जाता है	प्राप्स्यते पाया जायगा	प्राप्यताम् पाया जाय	प्राप्येत=	प्राप्यत पाया गया	प्राप्स्यत पाया जाता
याच	याच्यते माँगा जाता है	याचिष्यते माँगा जायगा	याच्यताम् माँगा जाय	याच्येत=	अयाच्यत माँगा गया	अयाचिष्यत माँगा जाता
मन	मन्यते माना जाता है	मंस्यते माना जायगा	मन्यताम् माना जाय	मन्येत=	अमन्यत माना गया	अमंस्यत माना जाता

११—भाववाच्य के रूप—(अकर्मक धातुओं से भाववाच्य में यक् प्रत्यय होता है तथा कर्मवाच्य के समान ही आत्मनेपद का प्रयोग होता है परन्तु भाववाच्य में केवल प्रथम पुरुष के एक वचनका ही प्रयोग होता है। यथा— मया स्थीयते, आवाभ्याम्, स्थीयते, अस्माभिः स्थीयते)

शी	शय्यते सोया जाता है	शयिष्यते सोया जायगा	शय्यताम् सोया जाय	शय्येत=	अशय्यत सोया गया	अशयिष्यत सोया जाता
जागृ	जागर्य्यते जागा जाता है	जागरिष्यते जागा जायगा	जागर्य्यताम् जागा जाय	जागर्य्येत =	अजागर्य्यत जागा गया	अजागरिष्यत जागा जाता
स्था	स्थीयते रहा जाता है	स्थास्यते रहा जायगा	स्थीयताम् रहा जाय	स्थीयेत =	अस्थीयत रहा गया	अस्थास्यत रहा जाता
जीव	जीव्यते जीया जाता है	जीविष्यते जीया जायगा	जीव्यताम् जीया जाय	जीव्येत=	अजीव्यत जीया गया	अजीविष्यत जीया जाता
क्रीड	क्रीड्यते खेला जाता है	क्रीडिष्यते खेला जायगा	क्रीड्यताम् खेला जाय	क्रीड्येत=	अक्रीड्यत खेला गया	अक्रीडिष्यत खेला जाता

कुछ अन्य अकर्मक धातुओं के भाववाच्य के एक-एक रूप—चल-चलना-चल्यते, आस-बैठना-आस्यते, भ्रम-घूमना-भ्रम्यते, बस-रहना-उष्यते, हस-हँसना-हस्यते, रुद-रोना-रुद्यते, उत्स्था-उठना उत्थीयते, उपविश-बैठना-उपविश्यते, युध-लड़ना-युध्यते, पत-गिरना-पत्यते, प्रलप-बकना-प्रलप्यते, पलाय-भागना-पलाय्यते, जन-पैदा होना-जन्यते इत्यादि।

१२—कर्मकर्तृवाच्य के रूप—जब कर्म ही कर्त्ता बन जाता है तो कर्मकर्तृवाच्य होता है यथा—ओदनः पच्यते (भात पकता है) घटः भिद्यते (घड़ा फूटता है) वृक्षः छिद्यते (पेड़ कटता है) इत्यादि।

१३—पूर्वलिखित णिजन्त (प्रेरणार्थक) क्रियाओं के कर्मवाच्य के रूप। सभी प्रेरणार्थक क्रियायें सकर्मक होती हैं अतः इनके भाववाच्य के रूप नहीं होते।

	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
कृ	कार्यते कराया जाता है	कारयिष्यते कराया जायगा	कार्यताम् कराया जाय	कार्य्येत	अकार्य्यत कराया गया	अकारयिष्यत कराया जाता
पठ	पाठ्यते पढ़ाया जाता है	पाठयिष्यते पढ़ाया जायगा	पाठ्यताम् पढ़ाया जाय	पाठ्येत	अपाठ्यत पढ़ाया गया	अपाठयिष्यत पढ़ाया जाता
वद	वाद्यते बजाया जाता है	वादयिष्यते बजाया जायगा	वाद्यताम् बजाया जाय	वाद्येत	अवाद्यत बजाया गया	अवादयिष्यत बजाया जाता
गम	गम्यते बिताया जाता है	गमयिष्यते बिताया जायगा	गम्यताम् बिताया जाय	गम्येत	अगम्यत बिताया गया	अगमयिष्यत बिताया जाता
स्था	स्थाप्यते रखा जाता है	स्थापयिष्यते रखा जायगा	स्थाप्यताम् रखा जाय	स्थाप्येत	अस्थाप्यत रखा गया	अस्थापयिष्यत रखा जाता
पा	पाय्यते पिलाया जाता है	पाययिष्यते पिलाया जायगा	पाय्यताम् पिलाया जाय	पाय्येत	अपाय्यत पिलाया गया	अपाययिष्यत पिलाया जाता
दृश	दर्श्यते दिखाया जाता है	दर्शयिष्यते दिखाया जायगा	दर्श्यताम् दिखाया जाय	दर्श्येत	अदर्श्यत दिखाया गया	अदर्शयिष्यत दिखाया जाता
नी	नाय्यते लिवाजाया जाता है	नाययिष्यते लिवाजाया "	नाय्यताम् लिवाजाया जाय	नाय्येत	अनाय्यत लिवा जाया गया	अनाययिष्यत लिवा जाया "
लिख	लेख्यते लिखाया जाता है	लेखयिष्यते लिखाया जायगा	लेख्यताम् लिखाया जाय	लेख्येत	अलेख्यत लिखाया गया	अलेखयिष्यत लिखाया "
प्रच्छ	प्रच्छ्यते पुछवाया जाता है	प्रच्छयिष्यते पुछवाया "	प्रच्छ्यताम् पुछवाया जाय	प्रच्छ्येत	अप्रच्छ्यत पुछवाया गया	अप्रच्छयिष्यत पुछवाया "
कथ	कथ्यते कहवाया जाता है	कथयिष्यते कहलवाया "	कथ्यताम् कहवाया जाय	कथ्येत	अकथ्यत कहलवाया गया	अकथयिष्यत कहलवाया "
ज्ञा	ज्ञाप्यते जनाया जाता है	ज्ञापयिष्यते जनाया जायगा	ज्ञाप्यताम् जनाया जाय	ज्ञाप्येत	अज्ञाप्यत जनाया गया	अज्ञापयिष्यत जनाया जाता
ग्रह	ग्राह्यते ग्रहण कराया जाता है	ग्राहयिष्यते ग्रहण कराया "	ग्राह्यताम् ग्रहणकराया जाय	ग्राह्येत	अग्राह्यत ग्रहण कराया गया	अग्राहयिष्यत ग्रहण कराया
दा	दाप्यते दिलाया जाता है	दापयिष्यते दिलाया "	दाप्यताम् दिलाया जाय	दाप्येत	अदाप्यत दिलाया गया	अदापयिष्यत दिलाया जाता
श्रु	श्राव्यते सुनाया जाता है	श्रावयिष्यते सुनाया जाय "	श्राव्यताम् सुनाया जाय	श्राव्येत	अश्राव्यत सुनाया गया	अश्रावयिष्यत सुनाया जाता
प्राप्	प्राप्यते पहुँचाया जाता है	प्रापयिष्यते पहुँचाया "	प्राप्यताम् पहुँचाया जाय	प्राप्येत	प्राप्यत पहुँचाया गया	प्रापयिष्यत पहुँचाया जाता
जागृ	जागर्य्यते जगाया जाता है	जागरयिष्यते जगाया "	जागर्य्यताम् जगाया जाय	जागर्य्येत	अजागर्य्यत जगाया गया	अजागरयिष्यत जगाया जाता
शी	शाय्यते सुलाया जाता है	शाययिष्यते सुलाया जायगा	शाय्यताम् सुलाया जाय	शाय्येत	अशाय्यत सुलाया गया	अशाययिष्यत सुलाया जाता
मन	मान्यते मनवाया जाता है	मानयिष्यते मनाया जायगा	मान्यताम् मनवाया जाय	मान्येत	अमान्यत मनाया गया	अमानयिष्यत मनाया जाता
शिक्ष	शिक्ष्यते सिखाया जाता है	शिक्षयिष्यते सिखायाजायगा	शिक्ष्यताम् सिखाया जाय	शिक्ष्येत	अशिक्ष्यत सिखाया गया	अशिक्षयिष्यत सिखाया जाता
ज्वल	ज्वाल्यते जलाया जाता है	ज्वालयिष्यते जलाया "	ज्वाल्यताम् जलाया जाय	ज्वाल्येत	अज्वाल्यत जलाया गया	अज्वालयिष्यत जलाया जाता
निर्वा	निर्वाप्यते बुझाया जाता है	निर्वापयिष्यते बुझाया "	निर्वाप्यताम् बुझाया जाय	निर्वाप्येत	निरवाप्यत बुझाया गया	निरवापयिष्यत बुझाया जाता
उद्घट	उद्घाट्यते खोला जाता है	उद्घाटयिष्यते खोला "	उद्घाट्यताम् खोला जाय	उद्घाट्येत	उदघाट्यत खोला गया	उदघाटयिष्यत खोला जाता
आनी	आनाय्यते मँगाया जाता है	आनाययिष्यते मँगाया "	आनाय्यताम् मँगाया जाय	आनाय्येत	आनाय्यत मँगाया गया	आनाययिष्यत मँगाया जाता
उत्स्था	उत्थाप्यते उठाया जाता है	उत्थापयिष्यते उठाया "	उत्थाप्यताम् उठाया जाय	उत्थाप्येत	उदस्थाप्यत उठाया गया	उदस्थापयिष्यत उठाया जाता
प्रेष	प्रेष्यते भेजा जाता है	प्रेषयिष्यते भेजा जायगा	प्रेष्यताम् भेजा जाय	प्रेष्येत	अप्रेष्यत भेजा गया	अप्रेषयिष्यत भेजा जाता

१५—कृत् प्रत्यय, उनके अर्थ तथा उन से बने हुए शब्द। (ये सभी शब्द अव्यय के रूप में प्रयुक्त होते हैं)

तुमुन् (तुम्)

इस प्रत्यय का निमित्त (के लिये) अर्थ में प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने शब्दों का शक्, इष् लग्, गम्, प्राप, ज्ञा, तथा दा धातु के साथ प्रयोग होता है। उदाहरण नीचे देखें।

	सामान्य रूप	प्रेरणार्थक रूप
भू	भवितुम् हो, होना, होने	भावयितुम्
कृ	कर्तुम् कर, करना, करने	कारयितुम्
पठ्	पठितुम् पढ़, पढ़ना, पढ़ने	पाठयितुम्
वद्	वदितुम् बोल, बोलना, बोलने,	वादयितुम्
गम्	गन्तुम् जा, जाना जाने	गमयितुम्
स्था	स्थातुम् रह, रहना, रहने,	स्थापयितुम्
पा	पातुम् पी, पीना, पीने	पाययितुम्
दृश्	द्रष्टुम् देख, देखना, देखने	दर्शयितुम्
नी	नेतुम् लेजा, ले जाना, ले जाने	नाययितुम्
लिख	लिखितुम् लिख, लिखना, लिखने,	लेखयितुम्
प्रच्छ	प्रष्टुम् पूछ, पूछना, पूछने	प्रच्छयितुम्
कथ	कथयितुम् कह, कहना, कहने	कथयितुम्
ज्ञा	ज्ञातुम् जान, जानना, जानने	ज्ञापयितुम्
ग्रह	ग्रहीतुम् ले, लेना, लेने	ग्राहयितुम्
दा	दातुम् दे, देना, देने	दापयितुम्
श्रु	श्रोतुम् सुन, सुनना, सुनने	श्रावयितुम्
प्राप्	प्राप्तुम् पा, पाना, पाने	प्रापयितुम्
जागृ	जागरितुम् जाग, जागना, जागने	जागरयितुम्
शी	शयितुम् सो, सोना, सोने	शाययितुम्
याच्	याचितुम् माँग, माँगना, माँगने	याचयितुम्
मन्	मन्तुम् मान, मानना, मानने	मानयितुम्

उदाहरण—कर्तुं शक्नोति (कर सकता है) कर्तुम् इच्छति (करना चाहता है) कर्तुं यच्छति (करने जाता है) कर्तुं जानाति (करना जानता है) कर्तुं ददाति (करने देता है) कर्तुं लगति (करने लगता है) इत्यादि।

क्त्वा (त्वा) ल्यप् (य)

ये दोनों प्रत्यय पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में होते हैं। सामान्य धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है परन्तु जब धातु में कोई उपसर्ग लग जाता है तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय हो जाता है।

सामान्य रूप		प्रेरणार्थक रूप	
भूत्वा होकर	सम्भूय मिलकर	भावयित्वा	सम्भाव्य
कृत्वा कर	संस्कृत्य साफ कर	कारयित्वा	संस्कार्य
पठित्वा पढ़कर	सम्पठ्य अच्छी तरह पढ़कर	पाठयित्वा	सम्पाठ्य
वदित्वा बोलकर	अनूद्य अनुवाद कर	वादयित्वा	अनुवाद्य
गत्वा जाकर	आगत्य आकर	गमयित्वा	संगम्य
स्थित्वा ठहरकर	उत्थाय ऊठकर	स्थापयित्वा	उत्थाप्य
पीत्वा पीकर	निपीय अच्छी तरह पीकर	पाययित्वा	निपाय्य
दृष्ट्वा देखकर	सन्दृश्य अच्छी तरह देखकर	दर्शयित्वा	सन्दर्श्य
नीत्वा ले जाकर	आनीय ले आकर	नाययित्वा	आनाय्य
लिखित्वा लिखकर	उल्लिख्य उल्लेख कर	लेखयित्वा	आलेख्य
पृष्ट्वा पूछकर	आपृच्छ्य अच्छी तरह पूछकर	प्रच्छयित्वा	सम्प्रच्छ्य
कथयित्वा कहकर	संकथ्य अच्छी तरह कहकर	कथयित्वा	संकथ्य
ज्ञात्वा जानकर	प्रतिज्ञाय प्रतिज्ञा कर	ज्ञापयित्वा	विज्ञाप्य
गृहीत्वा लेकर	संगृह्य संग्रह कर	ग्राहयित्वा	संग्राह्य
दत्त्वा देकर	आदाय लेकर	दापयित्वा	प्रदाप्य
श्रुत्वा सुनकर	प्रतिश्रुत्य प्रतिज्ञा कर	श्रावयित्वा	प्रतिश्राव्य
× ×	प्राप्य पाकर		प्रापय्य
जागरित्वा जागकर	प्रजागर्य जागकर	जागरयित्वा	संजागर्य्य
शयित्वा सोकर	अतिशय्य बढ़कर	शाययित्वा	संशाय्य
याचित्वा माँगकर	×	याचयित्वा	संयाच्य
मत्वा मानकर	अनुमत्य अनुमोदन कर	मानयित्वा	सम्मान्य

ऊपर लिखे प्रेरणार्थक रूपों के अर्थ तथा प्रयोग का ज्ञान छात्रों को अपने अध्यापकों से कर लेना चाहिये।

णमुल् (अम्)

यह प्रत्यय किसी क्रिया के बार-बार करने के अर्थ में होता है। इससे बने शब्द अव्यय होते हैं।

सामान्य रूप	
भावं भावं	हो हो कर
पाठं पाठम्	पढ़ पढ़ कर
लेखं लेखम्	लिख लिख कर
गामं गामम्	जा-जा कर
स्थायं स्थायम्	रुक-रुक कर
पायं पायम्	पी-पी कर
गायं गायम्	गा-गा कर
श्रावं श्रावम्	सुन-सुन कर
प्रच्छं प्रच्छम्	पूछ-पूछ कर
दर्शं दर्शम्	देख-देख कर
पाचं पाचम्	पका-पका कर
खादं खादम्	खा-खा कर
घातं घातम्	मार-मार कर
धावं धावम्	दौड़-दौड़ कर
शायं शायम्	सो-सो कर
हासं हासम्	हँस-हँस कर
स्मारं स्मारम्	याद कर कर
भ्रामं भ्रामम्	घूम-घूम कर
गर्जं गर्जम्	गरज-गरज कर
वर्षं वर्षम्	बरस-बरस कर

उपर्युक्त "पढ़ पढ़कर" आदि शब्दों के स्थान पर पढ़ते-पढ़ते, लिखते-लिखते, आते-आते आदि भी अर्थ होते हैं।

१४—कृत्य एवं कृत् प्रत्यय, उनके अर्थ तथा उनसे बने हुए शब्द। ये शब्द क्रिया तथा विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। कृत्य एवं कृत्प्रत्ययान्त विशेषण शब्दों के साथ अस् एवं भू धातु के लट् लोट् लङ् लिङ् लृट् एवं लृङ् लकार के रूपों को लगाकर वाक्य बनाना सीखने के लिये पृष्ठ १७-१८ देखिये।

तव्यत् (तव्य) अनीयर् (अनीय) ण्यत् (य) यत् (य)

ये चारो कृत्य प्रत्यय चाहिये तथा योग्य अर्थमें होते हैं। ये सकर्मक धातु से कर्मवाच्य तथा अकर्मक धातु से भाववाच्य में होते हैं। इनसे बने शब्दों का क्रिया तथा विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। क्रिया होने पर केवल नपुंसकलिङ्ग के प्रथमाके एकवचन जैसा रूप होगा। पर विशेषण होने पर विशेष्य के समान ही इनके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन होंगे। उदाहरण नीचे देखें।

	सामान्य रूप		प्रेरणार्थक रूप
भू	भवितव्य, भवनीय, भाव्य	होना चाहिये, होने योग्य	भावयितव्य, भावनीय
कृ	कर्तव्य, करणीय, कार्य, कृत्य	करना चाहिये, करने योग्य	कारयितव्य, कारणीय
पठ्	पठितव्य, पठनीय, पाठ्य	पढ़ना चाहिये, पढ़ने योग्य	पाठयितव्य, पाठनीय
वद्	वदितव्य, वदनीय,	बोलना चाहिये, बोलने योग्य	वादयितव्य, वादनीय
गम्	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाना चाहिये, जाने योग्य	गमयितव्य, गमनीय
स्था	स्थातव्य, स्थेय	रहना चहिये, रहने योग्य	स्थापयितव्य, स्थापनीय
पा	पातव्य, पेय	पीना चाहिये, पीने योग्य	पाययितव्य, पायनीय
दृश्	द्रष्टव्य, दर्शनीय, दृश्य	देखना चाहिये देखने योग्य	दर्शयितव्य, दर्शनीय
नी	नेतव्य, नयनीय, नेय	ले जाना चाहिये, ले जाने ,,	नाययितव्य, नायनीय
लिख्	लेखितव्य, लेखनीय, लेख्य	लिखना चाहिये, लिखने योग्य	लेखयितव्य, लेखनीय
प्रच्छ्	प्रष्टव्य, प्रच्छनीय	पूछना चाहिये, पूछने योग्य	प्रच्छयितव्य, प्रच्छनीय
कथ	कथयितव्य, कथनीय, कथ्य	कहना चाहिये, कहने योग्य	कथयितव्य, कथनीय
ज्ञा	ज्ञातव्य, ज्ञेय	जानना चाहिये, जानने योग्य	ज्ञापयितव्य, ज्ञापनीय
ग्रह	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	लेना चाहिये, लेने योग्य	ग्राहयितव्य, ग्राहणीय
दा	दातव्य, देय	देना चाहिए, देने योग्य	दापयितव्य, दापनीय
श्रु	श्रोतव्य, श्रवणीय, श्रव्य	सुनना चाहिये, सुनने योग्य	श्रावयितव्य, श्रावणीय
प्राप्	प्राप्तव्य, प्रापणीय, प्राप्य	पाना चाहिये, पाने योग्य	प्रापयितव्य, प्रापणीय
जागृ	जागरितव्य, जागरणीय	जागना चाहिये, जागने योग्य	जागरयितव्य, जागरणीय
शी	शयितव्य, शयनीय	सोना चाहिये, सोने योग्य	शाययितव्य, शाययनीय
याच्	याचितव्य, याचनीय	माँगना चाहिये, माँगने योग्य	याचयितव्य, याचनीय
मन्	मन्तव्य, मननीय	मानना चाहिये, मानने योग्य	मानयितव्य, माननीय

क्रिया—त्वया, मया भवता, सर्वैः- कर्तव्यम्, गन्तव्यम्, चलितव्यम्, स्थातव्यम्।

विशेषण—पाठः कर्तव्यः, यात्रा कर्तव्या, भोजनं कर्तव्यम् इत्यादि।

क्त (त) क्तवतु (तवत्)

इन दोनों प्रत्ययों का भूतकाल के अर्थ में प्रयोग होता है। इनमें से कर्मवाच्य तथा भावाच्य में क्त (त) का प्रयोग होता है तथा कर्तृवाच्य में क्तवतु (तवत्) का प्रयोग होता है। परन्तु गम्, प्रा, इच्छ, शी, स्था वस्, जन्, रुह् आदि धातुओं से कर्तृवाच्य में भी क्त होता है। इन् प्रत्ययों से बने शब्दों का क्रिया तथा विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। विशेषण होने पर विशेष्य के समान लिङ्ग विभक्ति एवं वचन होगें।

सामान्य रूप		प्रेरणार्थकरूप
भूत हुआ गया	भूतवत् हुआ	भावित, भावितवत्
कृत किया गया	कृतवत् किया	कारित, कारितवत्
पठित पढ़ा गया	पठितवत् पढ़ा	पाठित, पाठितवत्
उदित बोला गया	उदितवत् बोला	वादित, वादितवत्
गत जाया गया	गतवत् गया	गमित, गमितवत्
स्थित ठहरा गया	स्थितवत् रहा, ठहरा	स्थापित, स्थापितवत्
पीत पीया गया	पीतवत् पीआ	पायित, पायितवत्
दृष्ट देखा गया	दृष्टवत् देखा	दर्शित, दर्शितवत्
नीत ले जाया गया	नीतवत् ले गया	नायित, नायितवत्
लिखित लिखा गया	लिखितवत् लिखा	लेखित, लेखितवत्
पृष्ट पूछा गया	पृष्टवत् पूछा	प्रच्छित, प्रच्छितवत्
कथित कहा गया	कथितवत् कहा	कथित, कथितवत्,
ज्ञात जाना गया	ज्ञातवत् जाना	ज्ञापित, ज्ञापितवत्
गृहीत लिया गया	गृहीतवत् लिया	ग्राहित, ग्राहितवत्
दत्त दिया गया	दत्तवत् दिया	दापित, दापितवत्
श्रुत सुना गया	श्रुतवत् सुना	श्रावित, श्रावितवत्
प्राप्त पाया गया	प्राप्तवत् पाया	प्रापित, प्रापितवत्
जागरित जगा गया	जागरितवत् जागा	जागरित, जागरितवत्
शयित सोया गया	शयितवत् सोया	शायित, शायितवत्
याचित माँगा गया	याचितवत् माँगा	याचित, याचितवत्
मत माना गया	मतवत् माना	मानित, मानितवत्

त—पु० कृतः कृतौ कृताः। स्त्री० कृता कृते कृताः। नपुं० कृतं कृते कृतानि।

तवत्—पुं० कृतवान्-वन्तौ-वन्तः स्त्री० कृतवती-वत्यौ-वत्यः नपुं० कृतवत्-वती-वन्ति।

तेन त्वया मया कृतम् (कर्मवाच्य) सः त्वं अहं कृतवान् (कर्तृवाच्य)

१६—कृत् प्रत्यय, उनके अर्थ तथा उनसे बने हुए शब्द। (ये शब्द विशेषण, तथा संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं)

शतृ (अत्) शानच् (आन)

ये दोनों प्रत्यय वर्तमानकाल के अर्थ में होते हैं तथा इनसे बने शब्दों का विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। इनमें से परस्मैपदी धातु से शतृ, आत्मनेपदी धातु से शानच् तथा उभयपदी धातु से दोनों प्रत्यय होते हैं।

सामान्य रूप		प्रेरणार्थक रूप
भवत्	होता हुआ	भावयत्
कुर्वत्, कुर्वाण	करता हुआ	कारयत्
पठत्	पढ़ता हुआ	पाठयत्
वदत्	बोलता हुआ	वादयत्
गच्छत्	जाता हुआ	गमयत्
तिष्ठत्	ठहरता हुआ	स्थापयत्
पिबत्	पीता हुआ	पाययत्
पश्यत्	देखता हुआ	दर्शयत्
नयत्	ले जाता हुआ	नाययत्
लिखत्	लिखता हुआ	लेखयत्
पृच्छत्	पूछता हुआ	प्रच्छयत्
कथयत्	कहता हुआ	कथयत्
जानत्, जानान,	जानता हुआ	ज्ञापयत्
गृह्णत्	गृह्णान लेता हुआ	ग्राहयत्
ददत्, ददान	देता हुआ	दापयत्
शृण्वत्	सुनता हुआ	श्रावयत्
प्राप्नुवत्	पाता हुआ	प्रापयत्
जाग्रत्	जागता हुआ	जागरयत
शयान	सोता हुआ	शाययत्
याचमान	माँगता हुआ	याचयत्
मन्यमान	मानता हुआ	मानयत्

पु० कुर्वन्, कुर्वन्तौ कुर्वन्तः
स्त्री० कुर्वती कुर्वत्यौ कुर्वत्यः

स्यतृ (स्यतृ) स्यमान

ये दोनों प्रत्यय भविष्यत् काल के अर्थ में होते हैं। इनसे बने शब्दों का विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। इनमें से परस्मैपदी धातु से स्यतृ, आत्मनेपदी धातु से स्यमान तथा उभयपदी धातु से दोनों प्रत्यय होते हैं।

सामान्य रूप	प्रेरणार्थक रूप
भविष्यत् होने वाला	भावयिष्यत्
करिष्यत् करने वाला	कारयिष्यत्
पठिष्यत् पढ़ने वाला	पाठयिष्यत्
वदिष्यत् बोलने वाला	वादयिष्यत्
गमिष्यत् जाने वाला	गमयिष्यत्
स्थास्यत् रहने वाला	स्थापयिष्यत्
पास्यत् पीने वाला	पाययिष्यत्
द्रक्ष्यत् देखने वाला	दर्शयिष्यत्
नेष्यत् ले जाने वाला	नाययिष्यत्
लेखिष्यत् लिखने वाला	लेखयिष्यत्
प्रक्ष्यत् पूछने वाला	प्रच्छयिष्यत्
कथयिष्यत् कहने वाला	कथयिष्यत्
ज्ञास्यत् जानने वाला	ज्ञापयिष्यत्
ग्रहीष्यत् लेने वाला	ग्राहयिष्यत्
दास्यत् देने वाला	दापयिष्यत्
श्रोष्यत् सुनने वाला	श्रावयिष्यत्
प्राप्स्यत् पाने वाला	प्रापयिष्यत्
जागरिष्यत् जागने वाला	जागरयिष्यत्
शयिष्यमाण सोने वाला	शाययिष्यत्
याचिष्यमाण माँगने वाला	याचयिष्यत्
मंस्यमान मानने वाला	मानयिष्यत्

पु० करिष्यन् करिष्यन्तौ करिष्यन्तः
स्त्री० करिष्यन्ती करिष्यन्त्यौ करिष्यन्त्यः

ण्वुल् (वु अक) तृच् (तृ) णिनि (इन्)

इन प्रत्ययों से बने शब्दों का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण के रूप में होता है। विशेषण होने पर इनके तीनों लिङ्गों में रूप चलते हैं। इनके उदाहरण नीचे लिखे हुए हैं।

		सामान्य रूप	प्रेरणार्थक रूप
भावक	भवितृ	भाविन् होने वाला	भावयितृ
कारक,	कर्तृ,	कारिन् करने वाला	कारयितृ
पाठक,	पठितृ,	पाठिन् पढ़ने वाला	पाठयितृ
वादक	वदितृ,	वादिन् बोलने वाला	वादयितृ
×	गन्तृ,	गामिन् जाने वाला	गमयितृ
×	स्थातृ	स्थायिन् रहने वाला	स्थापयितृ
×	पातृ,	पायिन् पीने वाला	पाययितृ
दर्शक	द्रष्टृ	दर्शिन् देखने वाला	दर्शयितृ
नायक	नेतृ,	× ले जाने वाला	नाययितृ
लेखक,	×	× लिखने वाला	लेखयितृ
प्रच्छक,	प्रष्टृ	× पूछने वाला	प्रच्छयितृ
×	कथयितृ	× कहने वाला	कथयितृ
×	ज्ञातृ	× जानने वाला	ज्ञापयितृ
ग्राहक,	ग्रहीतृ	ग्राहिन् लेने वाला	ग्राहयितृ
दायक,	दातृ	दायिन् देने वाला	दापयितृ
×	श्रोतृ	× सुनने वाला	श्रावयितृ
प्रापक	प्राप्तृ	प्रापिन् पाने वाला	प्रापयितृ
जागरक	जागरितृ	जागरिन् जागने वाला	जागरयितृ
शायक,	शयितृ	शायिन् सोने वाला	शाययितृ
याचक,	याचितृ	× माँगने वाला	याचयितृ
×	मन्तृ	× मानने वाला	मानयितृ

पुं० पाठकः पाठकौ पाठकाः स्त्री० पाठिका पाठिके पाठिकाः
पुं पठिता पठितारौ पठितारः ,, पठित्री पठित्र्यौ पठित्र्यः
पुं पाठी पाठिनौ पाठिनः ,, पाठिनी पाठिन्यौ पाठिन्यः

ल्युट् (यु अन) क्तिन् (ति)

इन दोनों प्रत्ययों में से ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिङ्ग तथा क्तिन् प्रत्यय से बने शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

सामान्य रूप		
भवन	भूति	होना
करण	कृति	करना
पठन	×	पढ़ना
वदन	×	बोलना
गमन	गति	जाना
स्थान	स्थिति	रहना
पान	पीति	पीना
दर्शन	दृष्टि	देखना
नयन	नीति	ले जाना
लेखन	×	लिखना
प्रश्न (पुं)	×	पूछना
कथन	×	कहना
ज्ञान	×	समझना
ग्रहण	×	लेना
दान	×	देना
श्रवण	श्रुति	सुनना
प्रापण	प्राप्ति	पाना
जागरण	×	जागना
शयन	×	सोना
याचन	×	माँगना
मनन	मति	मानना

इसी प्रकार घञ् (अ) प्रत्यय से भाव पाठ वाद लेख कार बोध लाभ भाग त्याग आदि पुंलिङ्ग शब्द बनते हैं।

सूचना—शतृ प्रत्यय से बने शब्दों के पुं० स्त्री० तथा नपुंसक लिङ्ग के रूपों में कहाँ-कहाँ नुम् होता है और कहाँ नहीं इसे शिक्षकों तथा छात्रों को भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

१७—कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में सामान्य तथा प्रेरणार्थक धातुओं के वर्तमान एवं भविष्यत् काल के बोधक कृदन्त रूप।

निम्नलिखित शब्दों के साथ अस् एवं भू धातु के लट् लोट् लङ् लिङ् लृट् एवं लृङ् लकार के रूपों को लगाकर ६ प्रकार के वाक्य बनाने के लिये पृष्ठ १७-१८ देखें।

शानच् (आन)

वर्तमानकाल के अर्थ में सामान्य क्रिया से कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में शानच् प्रत्यय।
विशेषण के रूप में तीनों लिङ्गों में प्रयोग।

शानच् (आन)

वर्तमान काल के अर्थ में प्रेरणार्थक क्रिया से कर्मवाच्य में शानच् (आन) प्रत्यय। विशेषण के रूप मे इनका तीनों लिङ्गों में प्रयोग होगा।

सामान्य रूप		प्रेरणार्थक रूप	
क्रियमाण	किया जा रहा, जाता हुआ	कार्य्यमाण	कराया जा रहा, जाता हुआ
पठ्यमान	पढ़ा जा रहा ,,	पाठ्ययमान	पढाया जा रहा ,,
उद्यमान	बोला जा रहा ,,	वाद्यमान	बजाया जा रहा ,,
गम्यमात	जाया जा रहा ,,	गम्यमान	जाया जा रहा ,,
स्थीयमान	ठहरा जा रहा ,,	स्थाप्यमान	ठहराया जा रहा ,,
पीयमान	पीआ जा रहा ,,	पाय्यमान	पिलाया जा रहा ,,
दृश्यमान	देखा जा रहा ,,	दर्श्यमाण	दिखाया जा रहा ,,
नीयमान	ले जाया जा रहा ,,	नाय्यमान	लिवा जा रहा ,,
लिख्यमान	लिखा जा रहा ,,	लेख्यमान	लिखाया जा रहा ,,
पृच्छ्यमान	पूछा जा रहा ,,	प्रच्छ्यमाण	पुछवाया जा रहा ,,
कथ्यमान	कहा जा रहा ,,	कथ्यमान	कहवाया जा रहा ,,
ज्ञायमान	जाना जा रहा ,,	ज्ञाप्यमान	जनाया जा रहा ,,
गृह्यमाण	लिया जा रहा ,,	ग्राह्यमाण	लिवाया जा रहा ,,
दीयमान	दिया जा रहा ,,	दाप्यमान	दिलाया जा रहा ,,
श्रूयमाण	सुना जा रहा ,,	श्राव्यमाण	सुनाया जा रहा ,,
प्राप्यमाण	पाया जा रहा ,,	प्राप्यमाण	पहुँचाया जा रहा ,,
जागर्य्यमाण	जागा जा रहा ,,	जागर्य्यमाण	जगाया जा रहा ,,
शय्यमान	सोया जा रहा ,,	शाय्यमान	सुलाया जा रहा ,,
याच्यमान	माँगा जा रहा ,,	याच्यमान	मँगवाया जा रहा ,,
मन्यमान	माना जा रहा ,,	मान्यमान	मनाया जा रहा ,,
बुध्यमान	समझा जा रहा ,,	बोध्यमान	समझाया जा रहा ,,
भूयमान	हुआ जा रहा ,,	भाव्यमान	हो जाया जा रहा ,,

स्यमान

भविष्यत्काल के अर्थ में सामान्य क्रिया से कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में स्यमान प्रत्यय।
विशेषण के रूप में तीनों लिङ्गों में प्रयोग।

स्यमान

भविष्यत् काल के अर्थ में प्रेरणार्थक क्रिया से कर्मवाच्य में स्यमान प्रत्यय। विशेषण के रूप में इनका तीनों लिङ्गों में प्रयोग होगा।

सामान्य रूप		प्रेरणार्थक रूप	
करिष्यमाण	किया जानेवाला	कारयिष्यमाण	कराया जाने वाला
पठिष्यमाण	पढ़ा जानेवाला	पाठयिष्यमाण	पढ़ाया जाने वाला
वदिष्यमाण	बोला जानेवाला	वादयिष्यमाण	बजाया जाने वाला
गंस्यमान	जाया जानेवाला	गमयिष्यमाण	ले जाया जाने वाला
स्थास्यमान	ठहरा जानेवाला	स्थापयिष्यमाण	ठहराया जाने वाला
पास्यमान	पीआ जाने वाला	पाययिष्यमाण	पिलाया जाने वाला
द्रक्ष्यमाण	देखा जानेवाला	दर्शयिष्यमाण	दिखाया जाने वाला
नेष्यमाण	ले जाया जानेवाला	नाययिष्यमाण	लिवा जाया जाने वाला
लेखिष्यमाण	लिखा जानेवाला	लेखयिष्यमाण	लिखाया जाने वाला
प्रक्ष्यमाण	पूछा जानेवाला	प्रच्छयिष्यमाण	पुछवाया जाने वाला
कथयिष्यमाण	कहा जानेवाला	कथयिष्यमाण	कहवाया जाने वाला
ज्ञास्यमान	जाना जानेवाला	ज्ञापयिष्यमाण	जनाया जाने वाला
ग्रहीष्यमाण	लिया जानेवाला	ग्राहयिष्यमाण	लिवाया जाने वाला
दास्यमान	दिया जानेवाला	दापयिष्यमाण	दिलाया जाने वाला
श्रोष्यमाण	सुना जानेवाला	श्रावयिष्यमाण	सुनाया जाने वाला
प्राप्स्यमान	पाया जानेवाला	प्रापयिष्यमाण	पहुँचाया जाने वाला
जागरिष्यमाण	जागा जानेवाला	जागरयिष्यमाण	जगाया जाने वाला
शयिष्यमाण	सोया जानेवाला	शाययिष्यमाण	सुलाया जाने वाला
याचिष्यमाण	माँगा जानेवाला	याचयिष्यमाण	मँगाया जाने वाला
मन्स्यमान	माना जानेवाला	मानयिष्यमाण	मनाया जाने वाला
भोत्स्यमान	समझा जानेवाला	बोधयिष्यमाण	समझाया जाने वाला
भविष्यमाण	हुआ जानेवाला	भावयिष्यमाण	होवाया जाने वाला

सूचना—उपर्युक्त सभी शब्दों के पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप क्रमशः बालक, विद्या तथा ज्ञान शब्द के समान चलेंगे।

१८—काल, उनके अवान्तर भेद तथा उनके कर्तृवाच्य में सामान्य तथा प्रेरणार्थक रूपों के हिन्दी-संस्कृत उदाहरण। इन कालभेदों तथा उनके उदाहरणों का ज्ञान न होने से आचार्य कक्षा तक के छात्र अनुवाद करने में असमर्थ होते हैं और भूल किया करते हैं।

सूचना १—कालों के केवल निम्नलिखित ६ * पुष्प चिह्नाङ्कित भेद तिङ् प्रत्ययों से बनते हैं। शेष भेद कृदन्त के शतृ शानच्, क्त क्तवतु तथा स्यतृ स्यमान प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों में अस् एवं भू धातु के लट्, लङ्, लिङ्, लृट् एवं लृङ् लकार के रूपों के लगाने से बनते हैं। विद्यार्थी इन्हें ध्यान देकर हृदयंगत कर लें तथा इसी प्रकार अन्य धातुओं के भी रूप चलाने का एवं उनका लेख, अनुवाद तथा वार्तालाप में प्रयोग करने का अभ्यास करें। २—नीचे लिखे उदाहरणों के सभी लिङ्गों तथा सभी पुरुषों के सभी वचनों में भी रूप चलाने चाहिये।

कर्तृवाच्य में सामान्य क्रिया के उदाहरण

काल	कालभेद	संस्कृत बनाने के नियम	हिन्दी उदाहरण
वर्तमान	सामान्य वर्तमान	लट् लकार	वह पढ़ता है
,,	तात्कालिक वर्तमान	लट्, शतृ शानच्, अस्-लट्	वह पढ़ रहा है
,,	सन्दिग्ध वर्तमान	शतृ शानच्, भू-लृट्	वह पढ़ता होगा
,,	सम्भाव्य अपूर्ण वर्त०	शतृ शानच्, अस्-भू-लिङ्	वह पढ़ता हो
,,	सम्भाव्य पूर्ण वर्त०	क्त क्तवतु, अस्-भू-लिङ्	उसने पढ़ा हो
भूत	सामान्य भूत	लुङ्, लङ् प्रचलित, क्तवतु	उसने पढ़ा
,,	पूर्ण भूत	क्त क्तवतु, अस्-लङ्	उसने पढ़ा था
,,	अपूर्ण भूत	लट् के साथ स्म का प्रयोग	वह पढ़ता था
,,	तात्कालिक भूत	शतृ शानच्; अस्-भू लङ्	वह पढ़ रहा था
,,	आसन्न भूत	क्त क्तवतु, अस् लट्	उसने पढ़ा है
,,	सन्दिग्ध भूत	क्त क्तवतु, भू लृट्	उसने पढ़ा होगा
,,	हेतुहेतुमद् भूत	लृङ् लकार (लिङ् भी)	वह पढ़ता
,,	सम्भाव्य अपूर्ण भूत	शतृ शानच्, भू-लृङ्	वह पढ़ता होता
,,	सम्भाव्य पूर्ण भूत	क्त क्तवतु, भू-लृङ्	उसने पढ़ा होता
भविष्यत्	सामान्य भविष्यत्	लृट् लकार	वह पढ़ेगा
,,	सम्भाव्य ,,	लिङ् लकार	वह पढ़े
,,	१-विधि		
,,	२-आज्ञा	लोट् लकार	वह पढ़े
,,	३-	स्यतृ स्यमान (तृच् भी)	वह पढ़ने वाला है

कर्तृवाच्य में प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण

संस्कृत उदाहरण	हिन्दी उदाहरण	संस्कृत उदाहरण
* स पठति	वह पढ़ाता है	* स पाठयति
स पठति पठन् अस्ति	वह पढ़ा रहा है	स पाठयति, पाठयन् अस्ति
स पठन् भविष्यति	वह पढ़ाता होगा	स पाठयन् भविष्यति
स पठन् स्यात् (भवेत्)	वह पढ़ाता हो	स पाठयन् भवेत् (स्यात्)
स पठितवान् स्यात् (भवेत्)	उसने पढ़ाया हो	स पाठितवान् स्यात् (भवेत्)
* स अपठत्, पठितवान्	उसने पढ़ाया	* स अपाठयत्, पाठितवान्
स पठितवान् आसीत्	उसने पढ़ाया था	स पाठितवान् आसीत्
स पठति स्म	वह पढ़ाता था	स पाठयति स्म
स पठन् आसीत्	वह पढ़ा रहा था	स पाठयन् आसीत्
स पठितवान् अस्ति	उसने पढ़ाया है	स पाठितवान् अस्ति
स पठितवान् भविष्यति	उसने पढ़ाया होगा	स पाठितवान् भविष्यति
* स अपठिष्यत् (पठेत्)	वह पढ़ाता	* स अपाठयिष्यत् (पाठयेत्)
स पठन् अभविष्यत्	वह पढ़ाता होता	स पाठयन् अभविष्यत्
स पठितवान् अभविष्यत्	उसने पढ़ाया होता	स पाठितवान् अभविष्यत्
* स पठिष्यति	वह पढ़ायेगा	* स पाठयिष्यति
* स पठेत्	वह पढ़ावे	* स पाठयेत्
* स पठतु	वह पढ़ावे	* स पाठयतु
स पठिष्यन् अस्ति (पठिता)	वह पढ़ाने वाला है	स पाठयिष्यन् अस्ति (पाठयिता

आवश्यक सूचना—एक धातु के सब मिलाकर कितने तिङन्त एवं कृदन्त रूप होते हैं तथा उन्हें मिलाने से कितने प्रकार के वाक्य बनते हैं इस बातको अच्छी तरह समझने के लिये छात्रों तथा अध्यापकों को भी संस्थान द्वारा प्रकाशित "धातुरूप निदर्शनम्" नाम की पुस्तक अवश्य देखनी चाहिये।

१९—काल, उनके अवान्तर भेद तथा उनके कर्मवाच्य में हिन्दी- संस्कृत उदाहरण। इन कालभेदों तथा उनके उदाहरणों का ज्ञान न होने से आचार्य कक्षा तक के छात्र अनुवाद करने में असमर्थ होते हैं और भूल किया करते हैं।

सूचना:—कर्मवाच्य में छ * पूष्पचिह्नांकित निम्नलिखित कालभेद कर्मवाच्य की तिङन्त क्रियाओं से बनते हैं। शेष भेद क्त, शानच् (यक् प्रत्यययुक्त) तथा स्यमान प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों में अस् एवं भू धातु के लट्, लङ् लिङ् लृट् एवं लृङ् लकार के रूपों को लगाने से बनते हैं। छात्रों को निम्नलिखित क्रियापदों में विभिन्न प्रकार के कर्ता एवं कर्म लगाकर अनुवाद बनाने का अच्छा अभ्यास कर लेना चाहिए। २—नीचे लिखे उदाहरणों के सभी विभक्तियों एवं वचनों में भी रूप चलाने चाहिये।

कर्मवाच्य में सामान्यक्रिया के उदाहरण

हिन्दी उदाहरण	संस्कृत उदाहरण
उससे पढ़ा जाता है	* तेन पठ्यते
,, पढ़ा जा रहा है	,, पठ्यमानम् अस्ति
,, पढ़ा जाता होगा	,, पठ्यमानं भविष्यति
,, पढ़ा जाता हो	,, पठ्यमानं स्यात्
,, पढ़ा गया हो	,, पठितं स्यात्
,, पढ़ा गया	,, * अपठ्यत, पठितम्
,, पढ़ा गया था	,, पठितम् आसीत्
,, पढ़ा जाता था	,, पठ्यते स्म
,, पढ़ा जा रहा था	,, पठ्यमानम् आसीत्
,, पढ़ा गया है	,, पठितम् अस्ति
,, पढ़ा गया होगा	,, पठितं भविष्यति
,, पढ़ा जाता	,, * अपठिष्यत
,, पढ़ा जाता होता	,, पठ्यमानम् अभविष्यत्
,, पढ़ा गया होता	,, पठितम् अभविष्यत्
,, पढ़ा जायगा	,, * पठिष्यते
,, पढ़ा जाय	,, * पठ्येत
,, पढ़ा जाय	,, *पठ्यताम्
,, पढ़ा जाने वाला है	,, पठिष्यमाणम् अस्ति
उसे पढ़ना है	,, पठितव्यं वर्तते
उसे पढ़ना पड़ता है	,, पठितव्यं भवति

कर्मवाच्य में प्रेरणार्थकक्रिया के उदाहरण

हिन्दी उदाहरण	संस्कृत उदाहरण
उससे पढ़ाया जाता है	तेन पाठ्यते
,, पढ़ाया जा रहा है	,, पाठ्यमानम् अस्ति
,, पढ़ाया जाता होगा	,, पाठ्यमानं भविष्यति
,, पढ़ाया जाता हो	,, पाठ्यमानं स्यात्
,, पढ़ाया गया हो	,, पाठितं स्यात्
,, पढ़ाया गया	,, * अपाठ्यत, पाठितम्
,, पढ़ाया गया था	,, पाठितम् आसीत्
,, पढ़ाया जाता था	,, पाठ्यते स्म
,, पढ़ाया जा रहा था	,, पाठ्यमानम् आसीत्
,, पढ़ाया गया है	,, पाठितम् अस्ति
,, पढ़ाया गया होगा	,, पाठितं भविष्यति
,, पढ़ाया जाता	,, * अपाठयिष्यत
,, पढ़ाया जाता होता	,, पाठ्यमानम् अभविष्यत्
,, पढ़ाया गया होता	,, पाठितम् अभविष्यत्
,, पढ़ाया जायगा	,, * पाठयिष्यते
,, पढ़ाया जाय	,, * पाठ्येत
,, पढ़ाया जाय	,, पाठ्यताम्
,, पढ़ाया जाने वाला है	,, पाठयिष्यमाणम् अस्ति
उसे पढ़ाना है	,, पाठयितव्यं वर्तते
उसे पढ़ाना पड़ता है	,, पाठयितव्यं भवति

विशेष आवश्यक सूचना

३—इस पत्रक में कालभेदों के संस्कृत उदाहरणों के कृदन्त शब्दों में केवल एक ही लिङ्ग के रूप दिये गये हैं—कर्तृवाच्य में पुंल्लिङ्ग तथा कर्मवाच्य में नपुंसक लिङ्ग के। परन्तु कर्ता के लिङ्ग के अनुसार इनके भी लिङ्ग बदल करके विद्यार्थियों को इनका प्रयोग करना चाहिए। अभ्यासार्थ कुछ तीनों लिङ्गों के शब्द दिये जाते हैं। विद्यार्थी एक-दो दिनों में इनका अच्छी तरह अभ्यास कर निपुणता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्यय	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
शतृ	पठन्	पठन्ती	पठत्
,,	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
शानच्	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
क्त	पठितः	पठिता	पठितम्
,,	कृतः	कृता	कृतम्
क्तवत्	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्
,,	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
स्यतृ	पठिष्यन्	पठिष्यन्ती	पठिष्यत्
,,	करिष्यन्	करिष्यन्ती	करिष्यत्
स्यमान	करिष्यमाणः	करिष्यमाणा	करिष्यमाणम्
शानच् (क०)	पठ्यमानः	पठ्यमाना	पठ्यमानम्
,,	क्रियमाणः	क्रियमाणा	क्रियमाणम्
तव्यत्	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्

२०—कुछ अन्य व्यवहारोपयोगी धातु और उनके छ लकारों के संक्षिप्त रूप ।

(इन धातुओं के भी प्रेरणार्थक, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के तथा कृत्य-कृत् प्रत्ययों के रूप जानने चाहिए)

१—भ्वादि गण के कुछ ऐसे परस्मैपदी धातु जिनके रूप आदि के छ लकारों में बिना किसी परिवर्तन के पठ् धातु के समान चलते हैं ।

धातु	लट्	लृट्	लोट	लिङ्	लङ्	लृङ्
चल्—चलना	चलति	चलिष्यति	चलतु	चलेत्	अचलत्	अचलिष्यत्
चर्—चरना	चरति	चरिष्यति	चरतु	चरेत्	अचरत्	अचरिष्यत्
भ्रम्—घूमना	भ्रमति	भ्रमिष्यति	भ्रमतु	भ्रमेत्	अभ्रमत्	अभ्रमिष्यत्
मिल्—मिलना	मिलति	मिलिष्यति	मिलतु	मिलेत्	अमिलत्	अमिलिष्यत्
रक्ष्—रक्षाकरना	रक्षति	रक्षिष्यति	रक्षतु	रक्षेत्	अरक्षत्	अरक्षिष्यत्
धाव्—दौड़ना	धावति	धाविष्यति	धावतु	धावेत्	अधावत्	अधाविष्यत्
पत्—गिरना	पतति	पतिष्यति	पततु	पतेत्	अपतत्	अपतिष्यत्
गल्—गलना	गलति	गलिष्यति	गलतु	गलेत्	अगलत्	अगलिष्यत्
खेल्—खेलना	खेलति	खेलिष्यति	खेलतु	खेलेत्	अखेलत्	अखेलिष्यत्
खाद्—खाना	खादति	खादिष्यति	खादतु	खादेत्	अखादत्	अखादिष्यत्
हस्—हसना	हसति	हसिष्यति	हसतु	हसेत्	अहसत्	अहसिष्यत्
ज्वल्—जलना	ज्वलति	ज्वलिष्यति	ज्वलतु	ज्वलेत्	अज्वलत्	अज्वलिष्यत्
लग्—लगना	लगति	लगिष्यति	लगतु	लगेत्	अलगत्	अलगिष्यत्

२—भ्वादि गण के कुछ पठ् के समान चलनेवाले अनिट् धातु, जिनके रूप लृट एवं लृङ् में इट् न होने के कारण बदल जाते हैं । शेष रूप पठ् के समान ही चलेंगे ।

	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
पच्—पकाना	पचति	पक्ष्यति	पचतु	पचेत्	अपचत्	अपक्ष्यत्
त्यज्—छोड़ना	त्यजति	त्यक्ष्यति	त्यजतु	त्यजेत्	अत्यजत्	अत्यक्ष्यत्
दह्—जलाना	दहति	धक्ष्यति	दहतु	दहेत्	अदहत्	अधक्ष्यत्
वह्—ढोना	वहति	वक्ष्यति	वहतु	वहेत्	अवहत्	अवक्ष्यत्
वस्—रहना	वसति	वत्स्यति	वसतु	वसेत्	अवसत्	अवत्स्यत्
यज्—यज्ञ करना	यजति	यक्ष्यति	यजतु	यजेत्	अयजत्	अयक्ष्यत्
नम्—झुकना	नमति	नंस्यति	नमतु	नमेत्	अनमत्	अनंस्यत्

३—भ्वादि गण के कुछ ऐसे धातु, जो मूल रूप में कुछ बदल कर पठ् धातु के समान चलते हैं । इनके लृट् और लृङ् की भिन्नता को विद्यार्थी ध्यान से देखें ।

धातु	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
दंश (दश) डँसना	दशति	दक्ष्यति	दशतु	दशेत्	अदशत्	अदक्ष्यत्
घ्रा (जिघ्र) सूँघना	जिघ्रति	घ्रास्यति	जिघ्रतु	जिघ्रेत्	अजिघ्रत्	अघ्रास्यत्
शिच् (सिञ्च) सींचना	सिञ्चति	सेक्ष्यति	सिञ्चतु	सिञ्चेत्	असिञ्चत्	असेक्ष्यत्
जि (जय) जीतना	जयति	जेष्यति	जयतु	जयेत्	अजयत्	अजेष्यत्
द्रु (द्रव) पिघलना	द्रवति	द्रोष्यति	द्रवतु	द्रवेत्	अद्रवत्	अद्रोष्यत्
शुच् (शोच्) शोक करना	शोचति	शोचिष्यति	शोचतु	शोचेत्	अशोचत्	अशोचिष्यत्
रुह (रोह) चढ़ना	रोहति	रोक्ष्यति	रोहतु	रोहेत्	अरोहत्	अरोक्ष्यत्
हृ (हर) हरना	हरति	हरिष्यति	हरतु	हरेत्	अहरत्	अहरिष्यत्
तॄ (तर) तैरना	तरति	तरिष्यति	तरतु	तरेत्	अतरत्	अतरिष्यत्
स्मृ (स्मर्) स्मरण करना	स्मरति	स्मरिष्यति	स्मरतु	स्मरेत्	अस्मरत्	अस्मरिष्यत्
वृष् (वर्ष) बरसना	वर्षति	वर्षिष्यति	वर्षतु	वर्षेत्	अवर्षत्	अवर्षिष्यत्
कृष् (कर्ष) खींचना	कर्षति	क्रक्ष्यति	कर्षतु	कर्षेत्	अवर्षत्	अक्रक्ष्यत्
ह्वे (ह्वय) बुलाना	ह्वयति	ह्वास्यति	ह्वयतु	ह्वयेत्	अह्वयत्	अह्वास्यत्
गै (गाय) गाना	गायति	गास्यति	गायतु	गायेत्	अगायत्	अगास्यत्

४—भ्वादि गण के कुछ आत्मनेपदी धातु जिनके रूप आदि के छ लकारों में बिना किसी परिवर्तन के याच् धातु के समान चलते हैं ।

धातु	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
शिक्ष्—सीखना	शिक्षते	शिक्षिष्यते	शिक्षताम्	शिक्षेत	अशिक्षत	अशिक्षिष्यत
भाष्—बोलना	भाषते	भाषिष्यते	भाषताम्	भाषेत	अभाषत	अभाषिष्यत
सेव्—सेवा करना	सेवते	सेविष्यते	सेवताम्	सेवेत	असेवत	असेविष्यत
वन्द्—वंदना करना	वन्दते	वन्दिष्यते	वन्दताम्	वन्देत	अवन्दत	अवन्दिष्यत
शंक्—शंका करना	शङ्कते	शङ्किष्यते	शङ्कताम्	शङ्केत	अशङ्कत	अशङ्किष्यत
यत्—प्रयत्न करना	यतते	यतिष्यते	यतताम्	यतेत	अयतत	अयतिष्यत

५—भ्वादि गण के कुछ ऐसे अनिट् आत्मनेपदी धातु जिनके रूप लट् और लङ् में याच् धातु के रूप से बदल जाते हैं। शेष रूप याच् के समान चलते हैं।

धातु	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
रभ्—आरम्भ करना	रभते	रप्स्यते	रभताम्	रभेत	अरभत	अरप्स्यत
रम्—रमना	रमते	रंस्यते	रमताम्	रमेत	अरमत	अरंस्यत
लभ्—पाना	लभते	लप्स्यते	लभताम्	लभेत	अलभत	अलप्स्यत

६—चुरादि गण के धातु जिनमें अय लगा देने पर उनके रूप आदि के छ लकारों में कथ धातु के समान ही चलते हैं। यथा—

चुर—चुराना—चोरयति	छद—ढँकना—छादयति	वञ्च—ठगना—वञ्चयति
रच—बनाना—रचयति	मार्ग—ढूँढना—मार्गयति	वच—बाँचना—वाचयति
भक्ष—खाना—भक्षयति	क्षल—धोना—क्षालयति	तर्ज—डरवाना—तर्जयति
चिन्त—सोचना—चिन्तयति	लल—दुलारना—लालयति	पाल—पालना—पालयति
गण—गिनना—गणयति	तड—मारना—ताडयति	गवेष—ढूढना—गवेषयति
पीड—पीडादेना—पीडयति	भूष—सजाना—भूषयति	पूज—पूजाकरना—पूजयति

७—तुदादि गण के कुछ अन्य धातु जिनके रूप भ्वादिगणी धातुओं के समान ही चलते हैं पर किसी-किसी के लट् एवं लङ् के रूप बदल जाते हैं। यथा—

विश—घुसना	विशति	वेक्ष्यति	विशतु	विशेत्	अविशत्	अवेक्ष्यत्
स्पृश—छूना	स्पृशति	स्प्रक्ष्यति	स्पृशतु	स्पृशेत्	अस्पृशत्	अस्प्रक्ष्यत्
सृज—पैदा करना	सृजति	स्रक्ष्यति	सृजतु	सृजेत्	असृजत्	अस्रक्ष्यत्
मुच—छोड़ना	मुञ्चति	मोक्ष्यति	मुञ्चतु	मुञ्चेत्	अमुञ्चत्	अमोक्ष्यत्

८—दिवादि गण के धातुओं के रूप य लगा देने पर चार लकारों में पठ धातु के समान ही चलते हैं पर लृट् एवं लङ् में भेद हो जाता है।

धातु	लट्	लृट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृङ्
नश—नष्ट होना—	नश्यति	नक्ष्यति	नश्यतु	नश्येत्	अनश्यत्	अनक्ष्यत्
नृत्—नाचना—	नृत्यति	नर्तिष्यति	नृत्यतु	नृत्येत्	अनृत्यत्	अनर्तिष्यत्
सिध—सिद्धहोना—	सिध्यति	सेत्स्यति	सिध्यतु	सिध्येत्	असिध्यत्	असेत्स्यत्
हृष—खुश होना—हृष्यति		त्रुट—टूटना—त्रुट्यति		दीप—चमकना—दीप्यति		
सिव—सीना—सीव्यति		भ्रम—घूमना—भ्राम्यति		लुप—लुप्तहोना—लुप्यति		
ष्ठिव—थूकना—ष्ठीव्यति		शुष—सूखना—शुष्यति		श्रम—श्रमकरना—श्राम्यति		

दिवादि गणी जन धातु (होना) आ० से०

लट्—जायते जायेते जायन्ते, जायसे जायेथे जायध्वे, जाये जायावहे जायामहे।
लोट्—जायताम् जायेताम् जायन्ताम्, जायस्व जायेथाम्, जायध्वम्, जायै जायावहै जायामहै।
लङ्—अजायत अजायेताम् अजायन्त, अजायथाःअजायेथाम् अजायध्वम्, अजाये अजायावहि-महि
लिङ्—जायेत जायेयाताम् जायेरन्, जायेथाः जायेयाथाम् जायेध्वम्, जायेय जायेवहि जायेमहि।
लृट्—जनिष्यते लृङ्—अजनिष्यत

९—अदादि गणी हन् धातु (मारना) प० से०

लट्—हन्ति हतः घ्नन्ति, हन्सि हथः हथ, हन्मि हन्वः हन्मः।
लोट्—हन्तु हताम् घ्नन्तु, जहि हतम् हत, हनानि हनाव हनाम।
लङ्—अहन् अहताम् अघ्नन्, अह अहतम् अहत, अहनम् अहन्व अहन्म।
लिङ्—हन्यात् हन्याताम् हन्युः, हन्याः हन्यातम् हन्यात, हन्याम् हन्याव हन्याम।
लृट्—हनिष्यति लृङ्—अहनिष्यत् (पठ के समान)

इसी प्रकार अद्—खाना—अत्ति, वच्—बोलना—वक्ति, इण्—जाना—एति, अधि-इ—पढ़ना—अधीते, शीङ्—सोना—शेते, जागृ—जागना—जागर्ति, आस—बैठना—आस्ते विद्—जानना—वेत्ति, दुह—दूहना—दोग्धि, या—जाना—याति, वा—बहना—वाति, पा—पालना—पाति, भा—चमकना—भाति, ब्रू—बोलना—ब्रूते इत्यादि रूप चलेंगे।

१०—रुधादि गणी रुध् धातु (रोकना) उ० प्र०

लट्—रुणद्धि रुद्धः रुन्धन्ति, रुणत्सि रुन्द्धः रुन्द्ध, रुणद्मि रुन्ध्वः, रुन्द्मः।
लोट्—रुणद्धु, रुन्द्धाम् रुन्धन्तु, रुन्द्धि रुन्द्धम् रुन्द्ध, रुणधानि रुणधाव रुणधाम।
लङ्—अरुणत् अरुन्द्धाम् धरुन्धन्, अरुणः अरुन्द्धम् अरुन्द्ध, अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्द्म।
लिङ्—रुन्ध्यात् रुन्ध्याताम् रुन्ध्युः, रुन्ध्याः रुन्ध्यातम् रुन्ध्यात, रुन्ध्याम् रुन्ध्याव रुन्ध्याम।
लृट्—रोत्स्यति लृङ्—अरोत्स्यत्।

११—जुहोत्यादि गण के धातु जिनमें धातु को द्वित्व हो जाता है। पूर्वोक्त दा धातु के समान। यथा—धा—धारण करना—दधाति, हु—हवन करना—जुहोति। भृ—भरण करना—बिभर्ति। भी—डरना—बिभेति इत्यादि।

१२—क्रयादि गण के धातुओं के रूप पूर्वोक्त ग्रह और ज्ञा के समान चलेंगे। इनके भी लट् और लृङ् के रूप आदि के चार लकारों से भिन्न हो जाते हैं। यथा—
क्री—खरीदना—क्रीणाति, बन्ध—बाँधना—बध्नाति, ग्रन्थ—गूँथना—ग्रथ्नाति, अश्—खाना—अश्नाति, पुष्—पुष्ट करना—पुष्णाति, मुष्—चुराना—मुष्णाति, प्री—प्रसन्न करना—प्रीणाति, पू—पवित्र करना—पुनाति इत्यादि।

१३—स्वादि गण के धातुओं के रूप पूर्वोक्त शक् और आप् धातु के समान चलेंगे। इनके भी लट् और लृङ् के रूप आदि के चार लकारों से भिन्न हो जाते हैं। यथा—
चि—चुनना—चिनोति, साध्—सिद्ध करना—साध्नोति, वृ—पसन्द करना—वृणोति, दु—दुःख देना—दुनोति, अश्—व्याप्त होना—अश्नोति इत्यादि।

१४—तनादि गण के धातुओं के रूप कृ धातु के समान चलेंगे। यथा—कृ—करना—करोति, कुरुते, तन—फैलाना—तनोति—तनुते, मन—मानना—मनुते।

२—तिङन्त प्रकरण का परिशिष्ट—

१-अनद्यतन परोक्षभूत—लिट् लकार (अर्थ लङ् के समान)

प्रथम पुरुष

	णल (अ, औ)	अतुस्	उस्
भू	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
कृ	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
पठ	पपाठ	पेठतुः	पेठुः
वद	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
गम	जगाम	जग्मतुः	जग्मः
स्था	तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
पा	पपौ	पपतुः	पपुः
दृश	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
नी	निनाय	निन्यतुः	निन्युः
लिख	लिलेख	लिलिखतुः	लिलिखुः
इष	इयेष	ईषतुः	ईषुः
प्रच्छ	पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः
कथ	कथयामास	कथयामासतुः	कथयामासुः
ज्ञा	जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः
ग्रह	जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः
दा	ददौ	ददतुः	ददुः
श्रु	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
शक्	शशाक	शेकतुः	शेकुः
आप्	आप	आपतुः	आपुः
जागृ	जजागार	जजागरतुः	जजागरुः
	एश्	आताम्	इरेच्
याच	ययाचे	ययाचाते	ययाचिरे
मन	मेने	मेनाते	मेनिरे

सूचना १—लिट् लकार में मध्यम तथा उत्तम पुरुष का प्रयोग मान्य नहीं है। २—लिट् लकार के प्रेरणार्थक रूप भावयामास, कारयामास आदि कथ धातु के समान चलेंगे।

२-सामान्य भूतकाल—लुङ्लकार (अर्थ लङ्के समान होगा)

प्रथम पुरुष

त्	ताम्	अन्, उः
अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः
अगमत्	अगमताम्	अगमन्
अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थुः
अपात्	अपाताम्	अपुः
अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषुः
अलेखीत्	अलेखिष्टाम्	अलेखिषुः
ऐषेत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषुः
अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः
अचकथत्	अचकथताम्	अचकथन्
अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः
अग्रहीत्	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषुः
अदात्	अदाताम्	अदुः
अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः
अशकत्	अशकताम्	अशकन्
आपत्	आपताम्	आपन्
अजागरीत्	अजागरिष्टाम्	अजागरिषुः
स्त	साताम्	सत
अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
अयाचिष्ट	अयाचिषाताम्	अयाचिषत
अमंस्त	अमंसाताम्	अमंसत

मध्यम पुरुष

स्	तम्	त
अभूः	अभूतम्	अभूत
अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
अवादीः	अवादिष्टम्	अवादिष्ट
अगमः	अगमतम्	अगमत
अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात
अपाः	अपातम्	अपात
अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट
अलेखीः	अलेखिष्टम्	अलेखिष्ट
ऐषीः	ऐषिष्टम्	ऐषिष्ट
अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट
अचकथः	अचकथतम्	अचकथत
अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट
अग्रहीः	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट
अदाः	अदातम्	अदात
अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट
अशकः	अशकतम्	अशकत
आपः	आपतम्	आपत
अजागरीः	अजागरिष्टम्	अजागरिष्ट
स्थाः	साथाम्	ध्वम्
अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिध्वम्
अयाचिष्ठः	अयाचिषाथाम्	अयाचिध्वम्
अमंस्थाः	अमंसाथाम्	अमन्ध्वम्

उत्तम पुरुष

अम्	व	म
अभूवम्	अभूव	अभूम
अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म
अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म
अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म
अगमम्	अगमाव	अगमाम
अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम
अपाम्	अपाव	अपाम
अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म
अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म
अलेखिषम्	अलेखिष्व	अलेखिष्म
ऐषिषम्	ऐषिष्व	ऐषिष्म
अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म
अचकथम्	अचकथाव	अचकथाम
अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म
अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म
अदाम्	अदाव	अदाम
अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म
अशकम्	अशकाव	वशकाम
आपम्	आपाव	आपाम
अजागरिषम्	अजागरिष्वअजागरिष्म	
सि	स्वहि	स्महि
अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि
अयाचिषि	अयाचिष्वहि	अयाचिष्महि
अमंसि	अमंस्वहि	अमंस्महि

सूचना—लुङ् लकार में विभिन्न धातुओं के रूपों में प्रत्ययों की विविधता के कारण बहुत भिन्नता होती है। इनके प्रेरणार्थकरूप अचीकरत्, अपीपठत् आदि होते हैं। छात्र इन रूपों को शिक्षकों से समझ लेंगे।

लुट् लकार (अनद्यतन भविष्यत्)

परस्मैपदी रूप

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष	
	ता	तारौ	तारः	तासि	तास्थः	तास्थ	तास्मि	तास्वः	तास्मः
कृ	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः,	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ,	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः
भू	भविता	भवितारौ	भवितारः,	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ,	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः
पठ्	पठिता	पठितारौ	पठितारः,	पठितासि	पठितास्थः	पठितास्थ,	पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः
गम्	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः,	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ,	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः
दृश	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः,	द्रष्टासि	द्रष्टास्थः	द्रष्टास्थ,	द्रष्टास्मि	द्रष्टास्वः	द्रष्टास्मः
नी	नेता	नेतारौ	नेतारः,	नेतासि	नेतास्थः	नेतास्थ,	नेतास्मि	नेतास्वः	नेतास्मः
प्रच्छ	प्रष्टा	प्रष्टारौ	प्रष्टारः,	प्रष्टासि	प्रष्टास्थः	प्रष्टास्थ,	प्रष्टास्मि	प्रष्टास्वः	प्रष्टास्मः
ज्ञा	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः,	ज्ञातासि	ज्ञातास्थः	ज्ञातास्थ,	ज्ञातास्मि	ज्ञातास्वः	ज्ञातास्मः
श्रु	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः,	श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ,	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः

आत्मनेपदी रूप

	ता	तारौ	तारः	तासे	तासाथे	ताध्वे	ताहे	तास्वहे	तास्महे
शी	शयिता	शयितारौ	शयितारः,	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे,	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे
याच्	याचिता	याचितारौ	याचितारः,	याचितासे	याचितासाथे	याचिताध्वे,	याचिताहे	याचितास्वहे	याचितास्महे
मन्	मन्ता	मन्तारौ	मन्तारः,	मन्तासे	मन्तासाथे	मन्ताध्वे,	मन्ताहे	मन्तास्वहे	मन्तास्महे

४—आशीर्लिङ् (आशीर्वाद के अर्थ में)

परस्मैपदी रूप

	यात्	यास्ताम्	यासुः,	याः	यास्तम्	यास्त,	यासम्	यास्व	यास्म
कृ	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः,	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त,	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म
भू	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः,	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त,	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

आत्मनेपदी रूप

शी	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्	सीय	सीवहि	सीमहि
कृ	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीध्वम्	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

२२—उपसर्ग एवं गति संज्ञक शब्द

१५—**उपसर्ग**—संस्कृत में २२ उपसर्ग होते हैं जिनके लगने से धातुओं के अर्थ बदलते हैं। उपसर्ग ये हैं—प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

१३—**गति**—कुछ शब्द गति कहलाते हैं। उनके भी लगने से धातुओं के अर्थ बदलते हैं। गति ये हैं—सत्, नमः, साक्षात्, अन्तः, अस्तम्, आविः, प्रादुः, पुरः, इत्यादि।

१७—**कुछ उदाहरण**—**भवति** = प्रभवति, अनुभवति, सम्भवति। **करोति** = अनुकरोति, पुरस्करोति, नमस्करोति **गच्छति** = अनुगच्छति, आगच्छति, अवगच्छति, इत्यादि। **विशति** = प्रविशति, उपविशति। **तिष्ठति** = उत्तिष्ठति, अनुतिष्ठति। **स्मरति** = विस्मरति। **हरति** = विहरति, प्रहरति, परिहरति,। **चलति** = प्रचलति, विचलति। गति के उदाहरण—सत्करोति, नमस्करोति। प्रादुर्भवति, आविर्भवति, अन्तर्भवति, पुरस्करोति, तिरस्करोति इत्यादि।

१९—कुछ उपसर्गों के लगने से कुछ परस्मैपदी धातु आत्मनेपदी बन जाते हैं। जैसे—जयति विजयते, गच्छति संगच्छते—इत्यादि। इसी प्रकार उपसर्गों के लगने से कुछ आत्मनेपदी धातु परस्मैपदी भी बन जाते हैं। यथा—रमते विरमति तिष्ठति—प्रतिष्ठते, उपतिष्ठते इत्यादि।

मूल्य : १६.५० रुपये मात्र

आनन्द कानन प्रेस, टेढ़ीनीम, वाराणसी

कुछ सन्नन्त [सन् (स) इच्छार्थक प्रत्ययान्त] धातुओं के प्रचलित तिङन्त एवं कृदन्त रूप

मूल धातु	सन्नन्त धातु	लट् लकार के रूप	अ प्रत्ययान्त संज्ञा शब्द	उ प्रत्ययान्त विशेषणशब्द पुं.	शतृ प्रत्ययान्त विशेषणशब्द पुं.
पठ-पढ़ना	पिपठिष पढ़ना चाहना	पिपठिषति पढ़ना चाहता है	पिपठिषा पढ़ने की इच्छा	पिपठिषुः पढ़ने का इच्छुक	पिपठिषन् पढ़ना चाहता हुआ
लिख-लिखना	लिलेखिष लिखना चाहना	लिलेखिषति लिखना चाहता है	लिलेखिषा लिखने की इच्छा	लिलेखिषुः लिखने का इच्छुक	लिलेखिषन् लिखना चाहता हुआ
गम-जाना	जिगमिष जाना चाहना	जिगमिषति जाना चाहता है	जिगमिषा जाने की इच्छा	जिगमिषुः जाने का इच्छुक	जिगमिषन् जाना चाहता हुआ
कृ-करना	चिकीर्ष करना चाहना	चिकीर्षति-ते करना चाहता है	चिकीर्षा करने की इच्छा	चिकीर्षुः करने का इच्छुक	चिकीर्षन् करना चाहता हुआ
भू-होना	बुभूष होना चाहना	बुभूषति होना चाहता है	बुभूषा होने की इच्छा	बुभूषुः होने का इच्छुक	बुभूषन् होना चाहता हुआ
दृश-देखना	दिदृक्ष देखना चाहना	दिदृक्षति देखना चाहता है	दिदृक्षा देखने की इच्छा	दिदृक्षुः देखना का इच्छुक	दिदृक्षन् देखना चाहता हुआ
पा-पीना	पिपास पीना चाहना	पिपासति पीना चाहता है	पिपासा पीने की इच्छा	पिपासुः पीने का इच्छुक	पिपासन् पीना चाहता हुआ
ज्ञा-जानना	जिज्ञास जानना चाहना	जिज्ञासते जानना चाहता है	जिज्ञासा जानने की इच्छा	जिज्ञासुः जानने का इच्छुक	जिज्ञासमानः जानना चाहता हुआ
ग्रह-लेना	जिघृक्ष लेना चाहना	जिघृक्षति लेना चाहता है	जिघृक्षा लेने की इच्छा	जिघृक्षुः लेने का इच्छुक	जिघृक्षन् लेना चाहता हुआ
नी-ले जाना	निनीष ले जाना चाहना	निनीषति ले जाना चाहता है	निनीषा ले जाने की इच्छा	निनीषुः ले जाने का इच्छुक	निनीषन् ले जाना चाहता हुआ
दा-देना	दित्स देना चाहना	दित्सति देना चाहता है	दित्सा देने की इच्छा	दित्सुःदेने का इच्छुक	दित्सन् देना चाहता हुआ
वच-बोलना	विवक्ष बोलना चाहना	विवक्षति बोलना चाहता है	विवक्षा बोलने की इच्छा	विवक्षुः बोलने का इच्छुक	विवक्षन् बोलना चाहता हुआ
हृ-हरना	जिहीर्ष हरना चाहना	जिहीर्षति हरना चाहता है	जिहीर्षा हरने की इच्छा	जिहीर्षुः हरने का इच्छुक	जिहीर्षन् हरना चाहता हुआ
तृ-तैरना	तितीर्ष तैरना चाहना	तितीर्षति तैरना चाहता है	तितीर्षा तैरने की इच्छा	तितीर्षुः तैरने का इच्छुक	तितीर्षन् तैरना चाहता हुआ
युध-लड़ना	युयुत्स लड़ना चाहना	युयुत्सति लड़ना चाहता है	युयुत्सा लड़ने की इच्छा	युयुत्सुः लड़ने का इच्छुक	युयुत्सन् लड़ना चाहता हुआ
मृ-मरना	मुमूर्ष मरना चाहना	मुमूर्षति मरना चाहता है	मुमूर्षा मरने की इच्छा	मुमूर्षुः मरने का इच्छुक	मुमूर्षन् मरना चाहता हुआ
जीव-जीना	जिजीविष जीना चाहना	जिजीविषति जीना चाहता है	जिजीविषा जीने की इच्छा	जिजीविषुः जीने का इच्छुक	जिजीवषन् जीना चाहता हुआ
लभ-पाना	लिप्स पाना चाहना	लिप्सति पाना चाहता है	लिप्सा पाने की इच्छा	लिप्सुः पाने का इच्छुक	लिप्सन् पाना चाहता हुआ

कुछ यङन्त [अधिक तथा बार बार के अर्थ में होने वाले यक् (य) प्रत्ययान्त] धातुओं के प्रचलित तिङन्त एवं कृदन्त रूप

मूल धातु	यङन्त धातु	लट् लकार के रूप	अर्थ
पठ्	पापठ्य	पापठ्यते अधिक या बार-बार पढ़ता है	अधिक या बार-बार पढ़ता हुआ
ज्वल	जाज्वल्य	जाज्वल्यते अधिक या बार-बार जलता है	अधिक या बार जलता हुआ
दीप	देदीप्य	देदीप्यते अधिक या बार-बार चमकता है	अधिक या बार-बार चमकता हुआ
क्रम	चङ्क्रम्य	चङ्क्रम्यते अधिक या बार-बार चलता है	अधिक या बार-बार चलता हुआ

शानच् (आन) प्रत्ययान्त विशेषण शब्द

पापठ्यमान **जाज्वल्यमान** **देदीप्यमान** **चङ्क्रम्यमाण**

इसी प्रकार पा धातु से पेपीयते, पेपीयमान्, रुद् धातु से रोरुद्यते रोरुद्यमान भ्रम धातु से बम्भ्रम्यते, बम्भ्रम्यमाण गै धातु से जेगीयते, जेगीयमान, वद धातु से वावद्यते, वावद्यमान भू धातु से बोभूयते, बोभूयमान आदि रूप होते हैं।

१. यङ्लुगन्त प्रक्रिया में यक् प्रत्यय का लोप हो जाने पर पापठीति, जाज्वलीति, देदीपीति, बोभवीति आदि रूप भी होते हैं। अर्थ पापठ्यते आदि के समान ही होता है।

नोट— २. इसी प्रकार अन्य धातुओं के भी सन्नन्त, यङन्त तथा यङ्लुगन्त रूपों का ज्ञान करना चाहिये तथा इनके कर्मवाच्य के भी रूपों को जानना चाहिये।

३. उपर्युक्त धातुओं के अन्य सभी लकारों में भी तथा अन्य कृत्प्रत्ययों में भी रूप चलते हैं। छात्रों को शिक्षक तथा अन्य पुस्तक की सहायता से उनका भी ज्ञान कर लेना चाहिये।